छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह – श्रावण–भाद्रपद, संवत् 2077
अगस्त 2020

ओ३म्

अंक 176, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

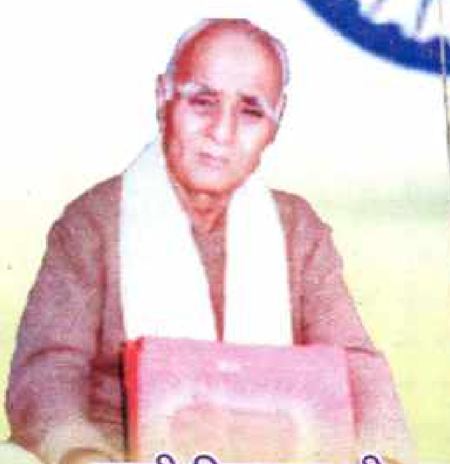

स्वामी दिव्यानन्द जी

स्वतन्त्रता दिवस, श्रावणी पर्व एवं रक्षाबन्धन की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ

छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा.विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में शिक्षा सत्र 2019-20 में

विद्यालय का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा

बोर्ड परीक्षा कक्षा 10वीं (हिन्दी माध्यम)

प्रथम
कु. टिक्कल साव
(95.01%)

द्वितीय
कु.शेफाली यादव
(87.83%)

तृतीय
आयुष राजपूत
(87.16%)

चतुर्थ
कु. निशा चन्द्रवंशी
(85.83%)

पंचम
कु. राफिया परवीन
(82.16%)

बोर्ड परीक्षा कक्षा 10वीं (अंग्रेजी माध्यम)

प्रथम
मुकेश पवार
(84.16%)

द्वितीय
अतुल मिश्रा
(77.66%)

तृतीय
लक्की देवांगन
(76.83%)

चतुर्थ
रोहित कुमार
(76.33%)

पंचम
कु. अंजली मिश्रा
(75.66%)

षष्ठ
आकाश वाला
(75.66%)

बोर्ड परीक्षा कक्षा 12वीं (हिन्दी माध्यम)

(परीक्षा परिणाम 89.04 प्रतिशत रहा)

प्रथम
जीत वर्मा
(84.20%)

द्वितीय
कु.प्रीति साहू
(81.40%)

तृतीय
कु. चेतना साहू
(80.80%)

चतुर्थ
कु. कल्पना बंजारे
(78.06%)

पंचम
कु. खुशी कुमारी
(77.02%)

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७७
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२१
दयानन्दाब्द - १९८

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 6260908636)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८९०३१६८४२४

प्रबंधक : के.के. गुप्ता
पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - १५, अंक १२ — ओ३म् — मास/सन् -अगस्त २०२०

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्जसज्जकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	शुद्ध सात्विक ज्योति का जन्म	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	नैतिक-युवा ही सच्चे अर्थों में देश के भविष्य हैं.	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	धर्मक्षेत्र के पुरोधा-श्रीकृष्ण	क्षितीश वेदालंकार	०८
४.	ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो हमें सत्यता की ओर जाने से रोके	विवेक प्रिय आर्य	१०
५.	श्रावणी हमें क्या चिन्तन देती है	स्व. महात्मा चैतन्यमुनि	१३
६.	महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज या आर्यसमाज मंदिर	पं. उमेदसिंह विशारद	१६
७.	हमारी जाति-मानव है	दाऊ आनंद कुमार	१८
८.	क्या ईश्वर ही पार लगायेगा???	आचार्य आर्यनरेश	२०
९.	महर्षि देव दयानन्द में मानवता कूट-कूट भरी थी	खुशहालचन्द्र आर्य	२१
१०.	यज्ञ से रोग चिकित्सा तथा रोगकारी विषैले कीटाणु व वायरसों का नाश	मनमोहन कुमार आर्य	२४
११	स्वामी समर्पणानन्द-व्यक्ति नहीं विचार	स्वामी विवेकानन्द	२७
१२	स्वातंत्र्ययोद्धा-दिव्यानन्द	साभार-जीवनदर्पण	२९
१२.	होमियोपैथी से थायरॉइड का उपचार संभव	डॉ. उत्कर्ष त्रिवेदी	३१
१३.	समाचार प्रवाह		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

शुद्ध सात्विक ज्योति का जन्म

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

पवमान ऋतं बृहत्, शूक्रं ज्योतिरजीजनत्।
कृष्णा तमांसि जङ्घनत्॥ ऋग्. ९.६६.२४

ऋषिः शतं बैखानसाः। देवता पवमानः सोमः। छन्दः गायत्री।

● **(कृष्णा)** काले **(तमांसि)** तमों को (जङ् घनत्) पुनः-पुनः अतिशय नष्ट करते हुए **(पवमानः)** पवमान सोम ने **(बृहत्)** महान्। **(ऋतं)** ऋत को (तथा) **(शुक्रं)** शुद्ध पवित्र **(ज्योतिः)** ज्योति को **(अजीजनत्)** जन्म दिया है।

यह जगत् सत्त्व, रजस्, तमस् गुणों का खेल है। सत्त्व गुण लघु है और प्रकाश को लाता है। रजोगुण चल है और कार्य में प्रवृत्त करता है। तमोगुण गुरु है और क्रिया-निरोध उत्पन्न करता है। यदि रजोगुण प्रवर्तक न हो तो सत्त्व और तमस् स्वयं प्रवृत्त नहीं हो सकते। इसी प्रकार तमोगुण निरोधक न हो तो रजस् और रजस् द्वारा प्रवृत्त सत्त्व सदा ही क्रियाशील बने रहें, कभी रुके ही नहीं। एवं तीनों गुण एक दूसरे के सहायक होते हैं। ये तीनों सब उचित अनुपात में मिलते हैं, तब जीवन को उसी प्रकार प्रवुद्ध करते हैं, जिस प्रकार उचित अनुपात में मिट्टी, तेल, बत्ती और अग्नि मिलकर दीपक को प्रज्वलित करते हैं। किन्तु अनुपात में न्यूनता या आधिक्य होने पर अनर्थकारी हो जाते हैं। तमोगुण का आधिक्य विशेष रुप से तामसिकता, जड़ता, मोह, अज्ञान, अविवेक आदि को उत्पन्न कर देता है। उससे मनुष्य अविद्या-ग्रस्त हो जाता है। अनित्य जगत्, देह आदि को नित्य समझना, अशुचि स्व-शरीर, कान्ता-शरीर आदि को शुचि समझना, दुःख-रुप वैषयिक सुख को वास्तविक सुख समझना और अनात्म-भूत, देह, इन्द्रिय आदि को आत्मा समझना ही अविद्या है। हृदय में अविद्या का साम्राज्य हो जाने पर मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव सभी तामसिक हो जाते हैं। घनघोर काले तमोगुणों से आच्छन्न होकर मनुष्य दिशाभ्रष्ट हो जाता है। तमोगुण की इस काली निशा को काटनेवाला पवमान सोम के अतिरिक्त अन्य कौन है ? पावक सोम प्रभु चांद बनकर कृष्णा रात्रि के काले तमों को विच्छिन्न करते हैं, पुनः पुनः अतिशय तीव्रता के साथ अपनी दिव्य किरणों के प्रहार जर्जर करते हैं। वे न केवल तम को नष्ट करते हैं, अपितु सत्त्व-गुण की पवित्र ज्योति को, सत्त्व-गुण की निर्मल चन्द्रिका को भी जन्म देते हैं। सत्त्व की शुद्ध-शुभ्र ज्योति के जन्म से अन्तःकरण में बृहत् ऋत का महती ऋतंभरा प्रज्ञा का, उदय होता है, जिससे साधक को निर्विकल्पक समाधि का आनन्द प्राप्त होता है।

हे पवमान सोम ! आज मेरा यह सौभाग्य है कि तुमने मेरे हृदयान्तरिक्ष में उचित होकर तमोगुण के समस्त तमस्तोम को नष्ट-भ्रंष्ट कर सत्त्व की पवित्र ज्योति को तथा महान् ऋत को जन्म दिया है। इस दिव्य जन्म पर मैं मुग्ध हूं और मेरी कामना है कि यह मुझ में सदा के लिए स्थिर हो जाए। हे परमात्मन् ! तुम सदा मेरे हृदय-गगन में चन्द्र बन चमकते रहो।

संस्कृतार्थ :- १. हन् हिंसागत्योः यङ्लगन्तु शत्। २. शुचिर् पूतीभावे। ३. अनित्याशुचिदुःखानात्मस् नित्यशुचि-सुखात्मख्यातिरविद्या (योग. २.५)

सम्पादकीय

नैतिक-युवा ही सच्चे अर्थों में देश के भविष्य हैं.

सहृदय पाठकों !

यह आप भलीभांति जानते हैं कि किसी भी समाज जाति व राष्ट्र का वास्तविक उत्थान उसके नागरिकों की सच्चरित्रता में सन्निहित है। सच्चरित्रता ही नैतिकता है, आइए जानने की कोशिश करते हैं कि आखिर नैतिकता किसे कहते हैं ? पहले यह समझ लेना नितान्त आवश्यक है। नीति-धर्म पर आधारित मानी गई है। आचरण-संहिता, सिद्धान्त, नियम, विधि-शास्त्र आदि ऐसा धरातल प्रदान करते हैं, जिस पर नैतिकता का भवन स्थित है। उचित और अनुचित, स्वकल्याण और अकल्याण, धर्म और अधर्म, 'कर' और 'मतकर' आदि का ज्ञान हमें नीति शास्त्र ही कराता है। इसका प्रमुख मानदण्ड ईमानदारी और औचित्य है। वस्तुतः नैतिकता में वाक् शुचिता के साथ-साथ आचरण-शुद्धि एवं सत्य पर आधारित व्यवहार की बात विशेष महत्वपूर्ण है।

नैतिकता हमें सिखाती है कि हम जातीय विद्वेष पारस्परिक घृणा, सन्देह आदि को समाप्त कर विश्व बन्धुत्व के आदर्श को क्रियात्मक रुप प्रदान करें। एच.जी.वैल्स के शब्दों में - एक मानव समाज का विकास करें। पर आज विद्यार्थी वर्ग अथवा बच्चों में नैतिक मूल्यों का किस सीमा तक ह्रास हुआ है - यह पिछले वर्षों के दौरान हुई, देश के प्रख्यात विश्वविद्यालयों की चार दीवारी से राष्ट्र भक्ति को तार-तार करने वाली षड़यंत्रकारी गंदी हरकत से स्पष्ट है। कविवर दिनकर ने इस बात पर कटाक्ष करते हुए आज के विद्यार्थी की बीमार मानसिकता को उजागर करते हुए कहा है -

> और छात्र बड़े पुरजोर हैं, कालेजों में सीखने को आये तोड़-फोड़ हैं,
> कहते हैं पाप है समाज में, धिक्क हम पै, जो कभी पढ़े इस राज में,
> अभी पढ़ने का क्या सवाल है ? अभी हमारा धर्म एक हड़ताल है।

आज बच्चों में इस प्रकार के नैतिक पतन के लिये किसी एक तत्व को नहीं, अपितु अनेक तत्वों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। बच्चा सर्वप्रथम अपने परिवार में, अपने माता-पिता के संरक्षण में रहकर बहुत कुछ सीखता है। उसका अधिकांश समय परिवार के साथ ही व्यतीत होता है। माता को उसका पहला गुरु और पिता को उसका दूसरा गुरु माना गया है। अतः बच्चे के नैतिक-अनैतिक होने की जिम्मेदारी सर्वप्रथम परिवार की ही है।

हमें यहां यह देखना होगा कि क्या परिवार बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान कर रहे हैं, जिनमें संकीर्णता का कोई स्थान न हो, बल्कि सबके प्रति सहानुभूति, प्रेम और उदारता

की भावना हृदय में हो । यह सब शिक्षित परिवारों द्वारा ही सम्भव है । परिवार के पश्चात् विद्यालय बच्चे का परिवार बन जाता है । यहां उसका सम्पर्क अध्यापक-पाठ्यक्रम और नये-नये साथियों से होता है।

इस प्रसंग में यह बात विशेष रुप से विचारणीय है कि शिक्षा नीति में पहले अध्यापक, जो बच्चों के लिए मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक है, अगर वह अपने इन गुणों को भुलाकर, आदर्शों को तिलांजलि देकर पतित हो जाए, तो फिर बच्चों में नैतिकता को खोजना गूलर के फूल के समान ही रहेगा। आज यदि शिक्षा-नीति पर भी ध्यान दें तो दुर्भाग्य से आज की शिक्षा प्रणाली भी पुस्तकीय, लड़खड़ाती हुई और अपूर्ण है। आज का विद्यार्थी वर्ग जीवन से निराश है, वह कुंठा और संत्रास का जीवन जीता हुआ, भौतिक सुख को ही सच्चा सुख मान बैठा है। उसके लिए उसका परम लक्ष्य डिग्री प्राप्त कर, कोई कुर्सी वाली नौकरी प्राप्त करना मात्र रह गया है। उसके पास भविष्य के लिए कोई योजना नहीं है। भावी जीवन की कोई रुपरेखा नहीं है। वह हर कहीं कमियां तो निकाल सकता है, पर अपने ठोस सुझाव नहीं दे सकता। वह पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंग कर अपनी सभ्यता और संस्कृति को दिन-प्रतिदिन भूलता जा रहा है। आज हिप्पी बनने का चाव उसमें जोरों से जाग रहा है, जबकि हमारा नैतिक आदर्श तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में इस प्रकार -

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिये जीते न थे, वे स्वार्थ-रत हो, मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार में उपकार हित, जब जन्म लेते थे कभी, निश्चेष्ट होकर किस तरह, वे बैठ सकते थे कभी ॥

सन् १९६४-६६ की शिक्षा -आयोग की रिपोर्ट में कहा गया था कि आधुनिकता के मार्ग पर जाने की इच्छा रखने वाले पारस्परिक समाजों को पहले अपनी शिक्षा-व्यवस्था को बदलना चाहिए, क्योंकि शिक्षा का पारस्परिक ढांचा जितना अधिक व्यापक होता जाएगा, उसे बदलना उतना ही मुश्किल और महंगा होता जाएगा और आगे चल कर हुआ भी ऐसा ही ! धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा की अवहेलना करने से विद्यार्थी-असंतोष कम नहीं हुआ। वे अपने कर्त्तव्यों को भुलाकर अधिकारों को प्राप्त करने की दौड़-धूप में लगे हुए हैं। अतः विद्यार्थियों को रोजगार और विज्ञान की शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक तथा नैतिक, शिक्षा का दिया जाना वर्तमान समय में अनिवार्य होना चाहिए। यह संतोष का विषय है कि वर्तमान सरकार जो नई शिक्षा नीति लेकर आ रहीहै उसके प्रस्तावों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह नैतिक व सामाजिक सरोकारों को लिए हुए एक व्यवहारिक युगानुरुप सशक्त समाज निर्माण में काफी हद तक सहायक सिद्ध होगा। नम्बर की दौड़ वाली गलाकाट स्पर्धा कम होकर एक स्वस्थ वातावरण को जन्म देगी। इससे उसमें दैवी गुण अपना चमत्कार दिखा सकेंगे। नैतिक शिक्षा के मामले में भारत सरकार के बाद सबसे बड़े शैक्षिक संगठन डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान अपने हजारों विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को धर्म शिक्षा पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य विषय बनाये जाने पर गंभीरता से काम कर रहा है। इसके सुखद एवं चमत्कारिक परिणाम गत १४४ वर्षों से पूरे देश एवं विदेश में डी.ए.वी. की उपलब्धियों से सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

यह हर्ष का विषय है कि भारत में भी शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जा रहा है। कुछ प्रान्तों ने तो विगत वर्षों से अपने यहां के विद्यालयों और महाविद्यालयों में इसकी व्यवस्था भी कर ली है। यह इस देश का दुर्भाग्य है कि आजादी के सात दशक बीतने के बाद भी वही शिक्षा पद्धति जिसे मैकाले ने गुलाम मुल्क में गुलामी कराने की मानसिकता से शुरुआत की थी उसे अभी तक हमारी पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करते चले जा रहे हैं ऊपर से नोबल प्राइज विजेता नागरिकसपना देखते हैं जो कि असम्भव ही है। कुछ राजनैतिक दल तथा जातीय संगठन भी अपने गलित स्वार्थ, अन्ध साम्प्रदायिकता एवं कठोर कट्टरवादिता जैसे दूषणों को लेकर चलते हैं। वे बच्चों को कठपुतली बनाकर

अपने संकेतों पर, अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु मनोवांछित रुप से नचाते हैं। अतः आज समाज में घुन की भांति लगे भ्रष्टाचार के नानाविध रुपों को निर्मूल करने के लिए क्रान्ति का लाया जाना अपेक्षित है। बच्चा तभी अनैतिकता की दल-दल में फंसने से बच सकता है। दृष्य-श्रव्य उपकरणों, जैसे - सिनेमा, रेडियो, वीडियो, दूरदर्शन, नाटक आदि भी बच्चों में अनैतिकता को प्रश्रय देते हैं। आजकल व्हाट्सअप, फेसबुक इंस्टाग्राम जैसे न जाने कितने ही बरबादी के माध्यम नई पीढ़ी को अपने आगोश में निरन्तर कसते चले जा रहे हैं। इन्टरनेट का अथाह संसार उन्हें पथभ्रष्ट करने में ही अधिक कारगर हुआ है। दिल्ली के निर्भया काण्ड को अंजाम देने वाले दरिंदों ने मोबाईल का गलत प्रयोग को स्वयं स्वीकारा था। आजकल ऐसे चलचित्रों, गानों और कथा कहानियों, संवादों को प्रसारित, प्रदर्शित किया जाता है, जिनका दुष्प्रभाव बच्चों के अपरिपक्व मन-मस्तिष्क पर पड़ता है और बच्चा पथभ्रष्ट हो जाता है। इसके लिए आवश्यक होगा कि बच्चों की मानसिकता को ध्यान में रखकर चलचित्रों, गानों, कथा-कहानियों, संवादों आदि की रचना की जाए, जिससे कि बच्चा एक आदर्श ग्रहण कर सके और देश के लिए उत्तम नागरिक सिद्ध हो सके। यदि बच्चे की संगति अच्छी होती है तोवह अच्छी-अच्छी बातें ही ग्रहण करेगा। और यदि कहीं वह कुसंगति में पड़ गया तो समझो उसका सर्वनाश ही हो गया। क्योंकि कुसंगति तो बच्चे को अनैतिक बनाकर उसकी पाशविक प्रवृत्तियों को ही जगाती है। इसलिए यह परम आवश्यक है कि बच्चे को कुसंगतियों की हानियों को प्रेमपूर्वक समझा कर उसे सुसंगति में विचरने के सुअवसर प्रदान किये जाने चाहिए। क्योंकि मनुष्य एकान्त में तो ज्ञान प्राप्त करता है और नैतिकता सुसंगति में ही प्राप्त करता है।

अतः बच्चे को नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिए उत्तम पुस्तकों और सही पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था घरों तथा विद्यालयों में मुख्य रुप से की जानी चाहिए। विद्यालयों में इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु वहां के पुस्तकालयों का सही अर्थों में उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि पुस्तकें सच्ची मित्र, मार्गदर्शक और ज्ञान का भंडार होती है। अच्छी पुस्तकें पढ़ने पर बच्चा स्वयमेव नैतिक बनता पाएगा। कुछ लोग विद्यालयों में धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा देने का विरोध करते हैं। उनका कहना है कि भारत एक धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र है। यहां हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, यहूदी तथा अन्य जातियों के लोग बसते हैं और इनके बच्चे विद्यालयों में पढ़ते हैं। ऐसे में धार्मिक शिक्षा देने का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि किसी धर्म के सिद्धान्त कुछ और है और किसी के कुछ और। इस दृष्टि से किसी धर्म की पूजा पद्धति अथवा धर्म-ग्रन्थों को विद्यार्थियों पर थोपना सरासर अन्याय होगा। अन्य धर्म भी इसको गवारा नहीं करेंगे और न ऐसा करने की अनुमति ही देंगे।

इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि धर्म का अर्थ है- धारण करना। जैसा पहले भी बताया जा चुका है। जो-जो बातें अच्छी हों, सर्वहितकारी हों, सार्वभौमिक हों, जिन्हें सभी धर्म एक समान मानते हों, जिनमें संकोच न हो, और जो मानव तथा समाज की तात्कालिक समस्याओं को हल करने में सहयोगी हों, उन्हें धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का विषय सहज ही बनाया जा सकता है। इससे एक ओर तो विद्यार्थी-वर्ग अनुशासित और संयमी जीवन के प्रति जागरुक होकर नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देगा और दूसरी ओर इन विभिन्न धर्मों के प्रति उसके मन में निष्ठा पनपेगी। इसे हम सर्व-धर्म-समन्वय की भावना कहेंगे। अतएव धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा किसी एक धर्म अथवा जाति से संबंधित न होकर सभी धर्म एवं जातियों से संबंधित होनी चाहिए। सभी धर्मों एवं जातियों के विद्यार्थियों में सर्व-धर्म-समन्वय की भावना के साथ-साथ मानव-धर्म के गुण धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा से ही विकसित हो सकते हैं। इसलिए यदि हम चाहते हैं कि कल का भारत सच्चे अर्थों में अपने पूर्व गौरव को प्राप्त करे तो सभी मिलजुलकर नैतिकता को नई पीढ़ी के जीवन में आत्मसात् कराएँ, अन्य कोई मार्ग नहीं।

\- आचार्य कर्मवीर

जन्माष्टमी

धर्मक्षेत्र का पुरोधा-श्रीकृष्ण

– क्षितीश वेदालंकार

आर्यावर्त्त में राम और कृष्ण दो ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्हें राष्ट्रपुरुष और इतिहासपुरुष की दृष्टि से अद्वितीय कहा जा सकता है। राम मर्यादा-पुरुषोत्तम हैं और कृष्ण लीला-पुरुषोत्तम हैं। पुरुषोत्तम दोनों हैं। पुरुषोत्तम अर्थात् उत्तम पुरुष, अर्थात् आर्य। आर्यत्व की दृष्टि से जीवन को उत्तमता की पराकाष्ठा तक ले जाने वाले ये दोनों ऐसे अनुकरणीय महापुरुष हैं, जिनसे युग-युगान्तर तक मानव-जाति प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी। परन्तु इनकी स्तुति और भक्ति से ओतप्रोत मानव-हृदय ने अपनी कल्पनाशील बुद्धि के चमत्कार द्वारा इन दोनों ही महापुरुषों को मानवोत्तर से इस प्रकार मानवेत्तर बना दिया है कि तथाकथित आधुनिक बुद्धिवादी लोग इन दोनों ही इतिहास पुरुषों को अनैतिहासिक कहने में अपनी आधुनिकता मानने लगे हैं। परन्तु भारतीय जन-मानस ने अपने हृदय के सिंहासन पर इन दोनों को इतने दृढ़ भाव से विराजमान किया है कि उसे अपने परिवार या स्वयं अपने निज के अस्तित्व से भी अधिक इन इतिहास-पुरुषों की ऐतिहासिक सत्यता पर आस्था है।

ये दोनों इतिहास-पुरुष महान् स्वप्नद्रष्टा भी थे। दोनों ने ही अपने स्वप्नों को अपने जीवनकाल में चरितार्थ करके दिखा दिया। सामान्य व्यक्ति महान् स्वप्न नहीं देखा करते। कभी उत्साह में आकर वैसा कर भी बैठें तो उनके स्वप्न उनकी अपनी सीमाओं के कारण और संसार की विपरीत परिस्थितियों के कारण शेखचिल्ली के स्वप्न बनकर रह जाते हैं। पर इन दोनों महापुरुषों के जहां स्वप्न विराट् थे, वहां इनके कर्त्तव्य भी विराट् थे और उन स्वप्नों की पूर्ति भी उतनी ही विराट् थी। संसार का इतिहास असफल स्वप्नद्रष्टाओं के स्वप्नभंगों की कहानियों से भरा पड़ा है। उन असफलताओं के महासागर में इन दोनों महनीय महापुरुषों का स्वप्न-साफल्य अद्भुत ज्योति-स्तम्भ बनकर खड़ा है। संक्षेप में कहना हो तो यह कहा जा सकता है कि श्रीराम ने नेपाल के सीमावर्ती प्रदेश मिथिला से लेकर राक्षसाधिपति रावण की लंका तक-ठेठ उत्तर से लेकर ठेठ दक्षिण तक-सारे भारत को एक सूत्र में आबद्ध किया था, तो श्रीकृष्ण ने द्वारिका से लेकर मणिपुर तक-ठेठ पश्चिम से ठेठ पूर्व तक-सारे भारत को एक सूत्र में आबद्ध और एक दृढ़ केन्द्र के अधीन बना दिया कि समस्त राष्ट्र को इतना बलवान् और इतना अपराजेय बना दिया कि महाभारत के पश्चात् लगभग ४ हजार वर्ष तक अनेक विदेशी शक्तियाँ बार-बार प्रयत्न करने पर भी आर्यावर्त्त को खण्डित नहीं कर सकीं। आश्चर्य की बात यही है कि इन दोनों राष्ट्रपुरुषों के अन्य अवान्तर रूपों की चर्चा से जहाँ ग्रन्थ के ग्रन्थ भरे पड़े हैं, वहाँ इस राष्ट्रनिर्माता-रूप की चर्चा प्रायः नगण्य ही रह गई है। यह हमारी कूपमण्डूकता और मानसिक दृष्टि से बौनेपन की निशानी नहीं तो और क्या है ? ये महापुरुष जितने विराट् थे, स्वप्न की दृष्टि से भी और उसकी पूर्ति की दृष्टि से भी, हमारे लेखक और कवि उसकी तुलना में उतने ही वामन रह गए।

जिस स्वप्न की हम चर्चा कर रहे हैं, उसका बीज मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मन में ऋषियों द्वारा बोया गया था, जबकि योगेश्वर श्रीकृष्ण का यह स्वप्न स्वोपज्ञ था। राम का जीवन आदि से अन्त तक ऋषियों की योजना, उनके मार्गदर्शन और उनके अनुशासन से संचालित था और इसीलिये वे ऐसे सरोवर की तरह मर्यादित थे, जिसमें कभी ज्वार नहीं आ सकता। होश संभालने के बाद श्रीकृष्ण जीवन के प्रत्येक क्षण में, अन्तरात्मा से प्रेरित थे, इसलिए उनका जीवन एक ऐसी पहाड़ी नदी के समान है जो उछलती-कूदती, चट्टानों को तोड़ती, दुर्गम उपत्यकाओं में अपना मार्ग बनाती और बरसात में अपने कूल-किनारों की

मर्यादाओं को भंग करती लगातार आगे बढ़ती चली जाती है। विचारकों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को द्वादश कलावतार और श्रीकृष्ण को षोडश कलावतार कहा है। उनका अभिप्राय एक को दूसरे से बड़ा या छोटा कहने से नहीं, प्रत्युत राम क्योंकि सूर्यवंशी थे और सूर्य की गति ज्योतिष के हिसाब से बारह राशियों के अन्दर होती है, इसलिए राम को भी उन्होंने द्वादश कलाओं के अवतार के रूप में सम्बोधित कर दिया, और श्रीकृष्ण क्योंकि चन्द्रवंशी थे और चन्द्रमा की कृष्णपक्ष से शुक्लपक्ष तक सोलह कलाएँ मानी जाती हैं, इसलिए श्रीकृष्ण को षोडस कलावतार कह दिया। परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि श्रीराम को जिस युग में और जिन परिस्थितियं में अपने विराट् को स्वप्न को पूर्ण करने का सौभाग्य मिला, कदाचित् वे परिस्थितियाँ उतनी जटिल नहीं थी, जितनी श्रीकृष्ण के समय थीं। रामायणकालीन समाज तो काफी-कुछ मर्यादा में बँधा हुआ था जबकि कृष्णकालीन समाज मर्यादाओं के होते हुए भी उनको तोड़ने में ही अपनी शान समझता था। जिस युग में और जिन परिस्थितियों में श्रीकृष्ण ने सफलता प्राप्त की, उस युग में और उन परिस्थितियों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम होते तो क्या करते, यह केवल कल्पना का ही विषय बन सकता है।

हम में से अधिकांश लोग इतना तो जानते हैं कि हमारा एक राष्ट्र है और अतीत काल में उसके जीवन का आधार धर्म रहा है, किन्तु मानव-जीवन को सब पुरुषार्थों की प्राप्ति का साधन मानकर तद्नुसार समाज-व्यवस्था का निर्माण करके जो राष्ट्रधर्म तैयार होना चाहिए, उसकी रूप-रेखा क्या हो, उसके बारे में दिग्भ्रम ही अधिक दिखाई देता है। राष्ट्र जब जीवित रहते हैं, तो उसका आधार उनकी निश्चित जीवन-प्रणाली और उनके जीवन के उद्देश्य के रूप में उनका तत्त्वज्ञान रहता है। राष्ट्र के महापुरुष इसी तत्त्वज्ञान के आधार पर समय-समय पर इहलोक और परलोक की नीति, शत्रु -मित्र-व्यवहार, आदर्श और क्रियात्मकता की आचरणीय सीमा और व्यक्ति तथा समाज के आपसी सम्बन्धों को निर्धारित करते हैं। सर्वसाधारण उन महापुरुषों के आचरण और उनके द्वारा निर्धारित नीति का ही अनुगामी होता है। अमुक सिद्धान्त क्यों ग्रहण करने योग्य है, अथवा निश्चित सिद्धान्तों को त्याग देने से समाज का कौन-सा अहित होगा-आदि प्रश्नों की मीमांशा विचारवान् लोग निरन्तर करते रहते हैं। वे बताते हैं कि राष्ट्र और समाज का हित इन सिद्धान्तों का पालन करने से किस प्रकार प्राप्त होगा। इस प्रकार विचारवान् पुरुषों द्वारा निर्धारित सिद्धान्त ही उस राष्ट्र का तत्त्वज्ञान बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, हिटलरकालीन जर्मनी का राष्ट्रीय तत्त्वज्ञान एक भिन्न प्रकार का था जो आर्यन रक्त की श्रेष्ठता पर आधारित था, तो स्टालिनकालीन रूस का तत्त्वज्ञान रक्त पर अवलम्बित न होकर समाज की संस्कृति को आर्थिक आधार पर नियमित करना चाहता था। इस दृष्टि से भारत के राष्ट्रीय तत्त्वज्ञान का निर्धारित करने वाला महाभारत-जैसा और कोई ग्रन्थ हैं। यह अद्वितीय राष्ट्र-ग्रन्थ है। वेद महान् ग्रन्थ हैं। वे तो सृष्टि के आदि के होने के कारण ज्ञान-विज्ञान के मूल स्रोत हैं ही, किन्तु भारतीय समाज के सभी वर्ण, सभी जातियाँ और सभी आबाल-वृद्ध नर-नारियों का जैसा समावेश इस ग्रन्थ में है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। आचार-विचार, गृह-व्यवस्था, नीति, कल्पना, व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार, यहाँ तक कि हमारे रक्त के प्रत्येक कण में महाभारत के संस्कारों की छाया परिलक्षित होती है। इसलिए हम महाभारत को भारत के राष्ट्र-धर्म का प्रतिपादक ग्रन्थ कहते हैं। यह ग्रन्थ किन्हीं काल्पनिक कथाओं का पिटारा न होकर-जैसे कि पुराण हैं- उनसे भिन्न एक जीवित इतिहास-ग्रन्थ है। अतीत की सत्यगाथा, भविष्य की थाती और वर्तमान का आधार-सम्पूर्ण इतिहास इसमें समाहित है। यह सत्य है कि इतिहास के साथ-साथ यह काव्य भी है और काव्य में होनोक्ति, वक्रोक्ति, अन्योक्ति या अत्युक्ति अलंकार का रूप ग्रहण करती है। इसलिए इस महान् ग्रन्थ में कुछ अद्भुत अमानवीय और अलौकिक घटनाओं का भी वर्णन मिलता है। इस अलौकिकता के चक्कर में हमारी कितनी ही ऐतिहासिक कथाएँ दूषित भी हुई है, किन्तु सूक्ष्म निरीक्षण का यत्न किया जाय और काव्य के अलंकारों को छोड़कर खरे इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया जाय तो कठोरतम दृष्टि से जांचने पर हमारा सप्रमाण सिद्ध होने वाला गौरवशाली इतिहास भी महाभारत में विद्यमान है।

समालोचनात्मक

ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो हमें सत्यता की ओर जाने से रोके

लेखक : विवेक प्रिय आर्य,

प्रत्येक प्राणी का यह स्वभाव होता है कि वह दुःख से बचना तथा सुख को पाना चाहता है। फिर मनुष्य तो सृष्टि का सबसे श्रेष्ठ प्राणी है, वह क्यों नहीं सुख की प्राप्ति के लिए पूर्ण पुरूशार्थ करेगा ? आज संसार भर के प्रबुद्ध मनुष्य (चाहे वे किसी भी महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो) संसार को सुखी बनाने का यत्न अपने–अपने ढ़ंग से करते प्रतीत हो रहे हैं। परंतु इसके उपरांत भी आज सम्पूर्ण मानव समाज अशंति, आतंक, हिंसा, घृणा, मिथ्या, छल, कपट, ईर्ष्या, राग, द्वेष से ग्रस्त होकर अति दुःखी व अशांत है। विचार आता है कि क्या कारण है कि चिकित्सा करते रहने पर भी रोग बढ़ता ही जा रहा है ? मेरा मानना है कि इस सब का मूल कारण सत्य और वास्तविकता से अनभिज्ञ रहना अथवा जानकर भी उसके अनुकूल व्यवहार न करना ही है।

आज सारे संसार में विकास की होड लग रही है। हम छल से दूसरों को गिराकर उससे आगे जाना चाहते हैं। दूसरों की झोपडियां जलाकर अपने भव्य भवन बनाना चाहते हैं, दूसरों की थाली से सूखी रोटियां भी छीनकर स्वयं सुस्वाद सरस भोजन करना चाहते हैं, दूसरों के तन से जीर्ण शीर्ण वस्त्र भी छीनकर स्वयं बहुमूल्य वस्त्र पहनकर फैशन करना चाहते हैं तथा दूसरों का गला दबाकर स्वयं एकाकी अमर जीवन जीना चाहते हैं। क्या ऐसा जीवन हमारी सुख, शांति का विनाशक नहीं? क्या मानवीय हत्या का हनन करने वाला नहीं है ? हमारा विकास तो तभी होगा जब हमारा जीवन सत्यता से परिपूर्ण होगा। क्योंकि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता। धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी–देवताओं के नाम पर जितना रक्तपात व वैमनस्यता संसार में हो रही है, संभवतः उतना किसी अन्य कारण से नहीं। धर्म के नाम पर यह पाप क्यों? धर्म और ईश्वर के नाम पर ईर्ष्या, राग, द्वेष, घृणा, हिंसा क्यों ? हमें धर्म का ऐसा सच्चा स्वरूप संसार के सामने लाने का प्रयास करना होगा, जिसमें पाखण्ड, अंध ाविश्वास व असत्य का कोई स्थान न हो। यही विचार संसार के ऋषियों (ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त) का रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती तो परमाणु से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान व उससे अपना व दूसरों का उपकार करना ही विद्वानों का कर्तव्य बताते हैं। दुर्भायवश महाभारत के समय से वेद के नाम पर, धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी–देवताओं के नाम पर कुछ विकृतियों ने जन्म लिया और वेद केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित रह गया। उस वैदिक कर्मकाण्ड के नाम पर मांसाहार, व्यभिचार, पशुबलि, नरबलि, स्त्री व शूद्र वर्ग के प्रति हीन भावना, मदिरापान आदि कुरीतियां इस देश में फैल गई। एक ईश्वर की जगह अनेक देवी–देवता प्रचलित होकर विश्व में हजारों मत–मतान्तर चल पड़े।

सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्य सम्पन्न ईश्वर शक्ति के अस्तित्व में रहते हुए भी इन देवी–देवताओं (वह भी एक दो नही, चार छः नहीं अपितु पूरे तैतीस करोड) को प्रभाव में लाने की आवश्यकता क्यों हुई ? इसका किसी के पास कोई तर्क संगत उत्तर नहीं है। जीवन में पूजा का किसी रूप में कोई भी उपयोग संभव नहीं है और पूजा से कुछ भी प्राप्त कर पाना संभव नहीं, व्यक्ति जो कुछ प्राप्त करना चाहता है या करता है वह केवल अपने पौरूष और पुरूषार्थ भरे प्रयासों से प्राप्त करता है। लेकिन सहज और सरलतम रूप में प्राप्त करने की मनुश्य की स्वाभाविक मनः प्रवृत्ति ने उसे पौरूष और पुरूषार्थ से दूर ढकेल दिया और पूजा से वह कुछ भी प्राप्त नही कर सका। इस कारण देश और समाज पतित होता चला गया। समस्याएं बढ़ती गई, समाधान संभव नहीं हो सका। देश पराधीन

हो गया, विदेशी आक्रमणकारी हमारी राजसत्ता को हथियाकर बैठ गये। अत्याचार हो रहे, समाज में हा हाकार हो रहा, समाज लुटता–पिटता रहा पर कोई बचाने वाला पैदा ही नहीं हुआ। जिन देवी–देवताओं पर हम विश्वास साधकर बैठे वह दीन–हीन स्थिति में मौन धारण कर देवालयों में बैठे कांप रहे थे। हमारी रक्षा करना तो दूर वह स्वयं अपनी रक्षा भी नहीं कर पा रहे थे। हम ढोल, मजीरों, शंख, झांझर और चिमटा लेकर उन पत्थर के देवी–देवताओं के सामने गीत गाते कीर्तन करते रहे।

मौत के भय से थर–थर कांपते कायर कायर और क्लीवजन कंठीमाला हाथ में लेकर ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियो में अपना भाग्य लेख पढ़ने के लिए जन्मकुण्डली बिछाकर बैठे रहे। मंदिरों–देवालयों में जाकर देवी–देवताओं की मूर्तियों के सामने माथा रगडते रहे लेकिन उनके दिव्य चक्षु इहलोक के पैशाचिक दुराचारों को कभी नहीं देख सके। विदेशी आक्रांता इन मूर्तियों को तोडकर चकनाचूर करते रहे। उन्हें खण्ड–खण्ड कर कुओं, पोखरों में फैंका गया, पर न तो ये देवी–देवता कुछ कर सके और न उनके पुजारी। बल्कि यह पुजारी तो बलात्कार पीडित महिला की तरह असहाय और विवश होकर आंसू बहाते रहे। यदि इन्होंने इसके विपरीत स्वयं पौरूष की भाषा पढी होती, धर्म और ईश्वर के सच्चे निराकार स्वरूप को समझा होता तो कोई शक्ति इस देश की ओर आंख उठाकर नहीं देख पाती। सोमनाथ मंदिर की कहानी जब हमारे स्मृति पटल पर उभर कर आती है तो आंखों में खून उतर आता है। हम केवल पौराणिक आख्याओं तक सीमित बने रहे। भूगोल से हम प्रारंभिक परिचय कभी प्राप्त नहीं कर सके। इसलिए धरती को कभी शेषनाग के फन पर टिका दिया, कभी कश्यप की पीठ पर और कभी गाय के सींग पर। क्योंकि सभी जीवधारियों की कालावधि निश्चित है, अतः झूठ को स्थाई रूप देने की दृश्टि से इन तीनों को त्रिकालजयी बना दिया और धरती का गैंद रूप देकर इधर से उधर उठाकर रखते रहे। झूठ में हमारी अगाध आस्था रही है कि हमें अपने पूर्वजों की कही बात का भी ध्यान नहीं रहता। आर्यभट्ट और वराहमिहिर हमारे ही पूर्वज थे, जिन्होंने पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा की परिधि, उनका व्यास और उनकी आपस की दूरी की माप सटीक रूप में दी थी। लेकिन हमारे झूठ के क्षेत्र में वह कहीं बाधक न बन जाये इसलिए उसे जान–बूझकर दृष्टि ओझल कर दिया। हमारे यह पुजारी के व्यवसायी टिपकादास धरती पर फल कटहेरी की तरह ब्रह्म का बीज बोते रहे हैं, जिनके बेल रूप में फैलकर कहीं पैर टिकाने को स्थान नहीं छोडा है। हमारे यहां महाभारत के महानायक कर्मयोगी श्रीकृष्ण और गीता के रूप में उपलब्ध उनकी वैचारिक धरोहर युगों युगों तक मनु पुत्रों का मार्गदर्शन कर सकती है। लेकिन इन टिपकादासों ने उसकी विषयवस्तु की सहज विश्वसनीयता पर तमाम तरह के प्रश्नवाचक चिन्ह खडे कर दिये हैं। श्रीकृष्ण जैसे योगीराज, अदम्य व्यक्तित्व पर भी इन मिथ्यावाद के प्रणेता टिपकादासों ने अपनी अतृप्त यौन पिपासा को विभिन्न रूपों में उन पर निर्ममता से प्रत्यारोपित कर उन्हें रसिक बिहारी, छैल बिहारी, रास बिहारी, लीला बिहारी और बांके बिहारी जैसे तमाम तरह के नाम देकर उन्हें राधा के पैरों में महावर रचाने बैठा दिया।

आज धरती पर उपलब्ध सभी सुख सुविधाएं और उसके उपकरण स्वयं मानव ने पैदा किये हैं। किसी देवी देवता का उसमें इंच मात्र का योगदान नहीं है किंतु पाखण्डी–मिथ्यावादी अपने स्वार्थ हित में उसका विभिन्न रूपों में गुणगान करते चले आ रहे हैं। कालान्तर में धीरे–धीरे इस देवत्व भाव को समान भाव से पशु पक्षियों पर भी आरोपित कर दिया और अंत में यह देवता पत्थरों पर भी उकेरे जाने लगे। पराकाष्ठा की स्थिति तो यहां तक पहुंच गई कि ढेले पर कलावा बांधकर उसे सीधे–सीधे गणेश भगवान बना दिया गया। इस देश में भिखारी से लेकर पुजारी तक मांगकर खाने वालों की फौज खडी होती चली गयी। ऋषि ने 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' का जो उपदेश दिया उसके विपरीत बहुदेवतावाद का अंतहीन सिलसिला खडा हो गया, जो आज भी समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। पत्थरों, धातुओं और लकडियों के टकडों पर तमाम तरह के देवी–देवताओं की विचित्र–विचित्र

शक्लें उतारकर देवालयों, मंदिरों और घरों में खडी कर दी। यह देवी–देवता आज तक किसी को कुछ नहीं दे सके, बल्कि स्वयं इस कमाऊ समाज पर भार बन जाते हैं। हमारे ही पैदा किये हुए देवता, जो हमारी ही दी हुई व्यवस्था पर जीवित हैं, हमें उन्हीं के आगे मंगिता बनाकर बिठा दिया।

वैसे सृष्टि नियम के विरूद्ध बातें सभी मतों में हैं, जैसे मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद सहाब ने एक ही उंगली से चांद के दो टुकडे कर दिये। इसी प्रकार हमारे पुराणों में सबसे अधिक चमत्कारिक बाते हैं, जैसे हनुमान ने अपने बचपन में ही सूर्य को गाल में रख लिया, कुंती कर्ण कान से उत्पन्न हुआ, योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठा लिया, श्रीकृष्ण द्रोपदी का चीर बढ़ा दिया आदि। भूत–प्रेत, गण्डा, डोरी, श्राद्ध–तर्पण, फलित ज्योतिश, गृहों का नाराज होना या खुश होना तथा मूर्तिपूजा व अवतारवाद का मानना अंधविश्वास व पाखण्ड है। क्योंकि यह सब बातें प्रकृति नियम के विरूद्ध हैं। इसलिए इनको न मानकर वैदिक धर्म को मानना ही हर व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर व लाभदायक होगा।

वैदिक धर्म में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए संध्या करना (जिसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं), दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना (जिसे देवयज्ञ कहते हैं)। षरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए यम–नियमों से समाधि तक पहुंचने के लिए अश्टांग योग करना, दूसरों की भलाई के लिए परोपकार करना, वेदों सहित सभी आर्श ग्रन्थों को पढ़ना और उनके अनुसार जीवन बनाना आदि मुख्य सिद्धांत वैदिक धर्म के हैं। इसलिए हम अपने जीवन को पवित्र स्वस्थ्य रखना चाहते हैं तो हमें अन्य मतों व पन्थों को छोड़कर वैदिक धर्म अपनाना चाहिए, जिससे हम अपने परिवार, समाज, राष्ट्र व केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन को सफलता की ऊंचाईयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बने। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नही है।

निवास : ऊंचागांव (सुसाइन), नसीरपुर
(हाथरस / मथुरा) उ.प्र. – 281308

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

भारत वर्ष महान

आजादी की विजय-माल को ।
सदा सुगन्धित रखना ।।
भारत के शुभ संविधानों को ।
सदा सुरक्षित करना ।।
चिरंजीवी भव सत्य समर्पित ।
मेधावी सन्तान ।।
देश सुरक्षा सदा मांगती ।
वीरों का बलिदान ।।
कण-कण को दे तेज चेतना ।
जन-जन का कल्याण ।।
वेद ज्ञान अमृत की साधना ।
कोटि-कोटि वरदान ।।
विश्व सभ्यता का गौरव है ।
भारत वर्ष महान ।।
सत्य-सुरक्षा न्याय पथ पर ।
बढ़ते चलो जवान ।।

- स्व. हरबंशलाल कपूर

प्रेरणात्मक

श्रावणी हमें क्या चिन्तन देती है

- स्व. महात्मा चैतन्यमुनि

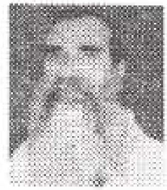

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दुःखों का कारण माना गया है इसलिए जो भी जीवन में सुख चाहता है उसे विवेकशील होना अनिवार्य है। विवेकी बनने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रन्थ हैं क्योंकि वेद स्वयं परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है । जिस प्रकार सूर्य के अभाव में अन्धकार में डूबकर व्यक्ति ठोकरें खाता है ठीक इसी प्रकार वेद ज्ञान के अभाव में व्यक्ति भटक जाता है। महर्षि पतञ्जलि जी ने अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेषों का भी जनक माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दुःखों का कारण है। व्यक्ति, समाज, परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श दिया कि वेदों की ओर लौटो। वेद स्वयं ही ज्ञान का पर्याय है अतः अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है। वेद का मनन-चिन्तन करने के लिए प्राचीन काल से ही जन साधारण का वेद के मनीषियों के यहां जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है जो कालान्तर में लुप्त प्राय होती चली गई मगर आर्यसमाज जैसी उत्कृष्ट संस्था द्वारा आज भी वेद स्वाध्याय के प्रति जनसाधारण में जागरुकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात् श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है। आर्यसमाज संस्था की यह विशेषता है कि किसी मत-मजहब को लेकर व्यक्तियों को बांटने का कार्य नहीं करती बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र में बांधकर तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगों में न केवल रुचि पैदा की जाती है बल्कि इस अवसर पर बड़े-बड़े पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया जाता है। यह एक अत्यधिक स्तुत्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन संस्कृति को लोग भूलते चले जा रहे हैं और अनेक प्रकार के सम्प्रदायों में बंटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषाक्त बनाते जा जा रहे हैं।

वेद हमें भौतिक और आध्यात्मिक रुप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज व्यक्ति भौतिकता वाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन हो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है उस आध्यात्मिकता को सब भूलते जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्ततः तृप्ति देने वाले नहीं है इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है मगर मृगतृष्णा रुपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बार चेतावनी देते हैं कि हम में तुम्हें तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है, मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डूबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है जहां वह है ही नहीं। वह इस

जीवन रुपी चौराहे पर खाली का खाली खड़ा है... अतृप्त है... रो भी रहा है... तड़प भी रहा है मगर पुनः पुनः भौतिक भोगों की आग में स्वयं झोंकता भी चला जा रहा है। उसकी स्थिति ठीक इसी प्रकार की गई है मानों कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तड़प भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है। इस त्रासदी से आज अधिकतर लोग रुबरू हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों को सम्बोधित करते हुए मानों वेद कहता है -

अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति ।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति ॥

(अर्थ. १०-८-३२)

अर्थात् पास बैठे हुए को छोड़ता नहीं, पास बैठे हुए को देखता नहीं। अरे उस परमपिता परमात्मा के काव्य वेद को देख जो न कभी मरता है और न कभी पुराना होता है। इस मन्त्र के भावों का यदि हम गहराई से मनन करें तो हमारे जीवन का कांटा ही बदल सकता है। संक्षिप्तता से इसका भाव हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा के काव्य अर्थात् प्रकृति और वेद ज्ञान के सम्यक अध्ययन से हम इस तथ्य को जान लें कि इस प्रकृति में सुख तो है मगर आनन्द नहीं है। यदि वास्तविक आनन्द का पान करना है तो चारित्रिक एवं भौतिक सृष्टि में उसकी तलाश छोड़कर उसे आध्यात्मिकता में खोजना होगा। आत्मा को उसकी वास्तविक खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है। इसलिए वेद मन्त्र हमें चेतावनी देते हुए कह रहा है कि यदि तुम सुख और आनन्द चाहते हो तो परमात्मा के शाश्वत नियमों का अवलोकन करके आत्मा रुपी रथी के इस रथ को परमात्मा की ओर मोड़ना होगा। परमात्मा के सान्निध्य में जाकर ही तुझे परम शान्ति और तृप्ति मिल सकती है।

हमारा वेद सप्ताह मनाने का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते-चलते अचानक जिन झाड़-झंखाड़ों में उलझ गए हैं उससे निकलने के लिए वेद ज्ञान को व्यवहारिकता में लाएं। आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व आतंक और भय के वातावरण से गुजर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जो सौहार्द और प्रेम का वातावरण था वह लुप्तप्राय ही हो गया है। मानव इतना हृदयहीन हो गया है कि जहां उसे दूसरों का उपकार करने से प्रसन्नता होती थी, आज वह अपकार करके प्रसन्न होने लगा है। अलगाववाद, मजहबवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद और सम्प्रदायवाद के काले बादल हमारे चारों मंडरा रहे हैं। कब किसके घर पर बिजली गिर जाए कुछ पता नहीं। इन समस्याओं का समाधान खोजा तो जा रहा है मगर स्थिति यह है कि मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। हम अपने ही देश को लें। यहां पर प्रत्येक नेता या दल अपनी-अपनी वोट की राजनीति खेल रहा है, राष्ट्र के सामूहिक विकास की किसी को चिन्ता नहीं है।तुष्टिकरण और वोट की राजनीति ने ऐसी दीवारें खड़ी कर दी है जो दिन-प्रतिदिन और भी अधिक ऊंची होती जा रही है। चाहे व्यक्तिगत हो, परिवार और समाज तथा देश की हो सभी समस्याओं का समाधान हमें वेद में मिल सकता है क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सत्य एक ऐसी रामबाण औषधि है जिससे सभी रोग समाप्त हो सकते हैं। वेद हमें सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है। हमारे साथ समस्या यही है कि हमने झूठ का सहारा ले रखा है तथा एक झूठ को सही ठहराने के लिए हम एक और झूठ का सहारा ले रहे हैं। इस प्रकार इन झूठों के अम्बार तले हम दब गए हैं। हमें इस बात को गांठ बांध लेना चाहिए कि झूठ के सहारे हमारा किसी भी क्षेत्र में उत्थान नहीं हो सकता। यह ठीक है कि जैसे रोगी को कड़वी दवाई खाने में तो अच्छी नहीं लगती है मगर उसका परिणाम सुखद होता है क्योंकि हमें अपने-अपने स्वार्थ के दायरों में सिमट कर जीने की आदत पड़ गई है मगर वास्तविकता यह है कि हमें अपने-अपने संकुचित दायरों से बाहर निकलकर सत्यता को स्वीकार करना होगा क्योंकि सत्य की सोच ही अन्ततः ठीक होती है। वेद हमें सत्य के साथ जुड़ने की ही प्रेरणा देता है।

हम चिन्तन करें कि आखिर मानव-समाज के भीतर ये दूरियां क्यों बढ़ती चली जा रही है। होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब

उच्चतम स्तरों को छू लेता है तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते हैं, ये अनुयायी उन आदर्शों पर तो चल नहीं पाते मगर मात्र लकीर के फकीर बन जाते हैं। जब महापुरुष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊंचाईयों को छुआ था उस प्रक्रिया को नजर अन्दाज करके और गुरुओं की मानों बाढ़ सी आ गई है। गुरु होना तो बुरी बात नहीं मगर गुरुडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। इससे मानवीय एकता को बहुत बड़ा धक्का लगा है तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है। इस व्यक्ति पूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है। इसी के आधार पर व्यक्तियों द्वारा बनाए गए अलग-अलग ग्रन्थों और उपदेशों को प्रमाण मानने की अज्ञानता का भी जन्म हुआ है। अलग-अलग नामों और पूजा पद्धतियों ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बांट दिया है। यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरुष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्प ज्ञानी होने के कारण न ही उसके द्वारा दिया गया ज्ञान निर्भ्रान्त और पूर्णतया सत्य हो सकता है। मगर आज जैसे मानों अन्धे ही अन्धों को रास्ता दिखा रहे हैं इसलिए अज्ञानता के गढ्ढे में गिरकर चतुर्दिक विनाश हो रहा है।

तथाकथित इन भगवानों की भीड़ में परमात्मा कहीं खो गया लगता है और मत-मजहब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है। एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति का मार्ग होना था, विलुप्त हो गई है। अतः आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए, जो वेद के आधार पर ही हो सकती है क्योंकि एकमात्र वेद पूर्णतया सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है।

: वास्तविक गुरु के लक्षण :

वेद और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों के पठन-पाठन को मुक्ति का साधन मानने वाला हो।

श्रावणी

वेद ही जग में हमारा ज्योति जीवन-सार है।
वेद ही सर्वस्व प्यारा, पूज्य प्राणाधार है ॥टेक॥
सत्यविद्या का विधाता, ज्ञान गुरुगण गेय है।
मानवों का मुक्तिदाता, धर्म धी का ध्येय है ॥
वेद ही परमेश प्रभु का प्रेम पारावार है ॥१॥

❀ ❀ ❀

ब्रह्म-कुल का देवता है, राजकुल रक्षक रहा।
वैश्य-वेश विभूषिता है, शूद्र-कुल स्वामी महा ॥
वेद ही वर्णाश्रमों का आदि है, आधार है ॥२॥

❀ ❀ ❀

श्रावणी का श्रेष्ठ उत्सव पुण्य पावन पर्व है।
वेदव्रत स्वाध्याय वैभव, आज ही सुख सर्व है ॥
वेदपाठी विप्रगण का दिव्य दिन दातार है ॥३॥

❀ ❀ ❀

वेद का पाठन-पठन हो वेद-वाद विवाद हो।
वेद हित जीवन मरण हो वेद-हित आह्लाद हो ॥
आर्यजन का आज से व्रत विश्व वेद-प्रचार है ॥४॥

❀ ❀ ❀

"विश्व भर को आर्य करना" वेद का सन्देश है।
"मृत्यु से किंचित् न डरना" ईश का आदेश है ॥
सृष्टि-सागर में हमारा, वेद ही पतवार है ॥५॥

❀ ❀ ❀

रोज-रोज सरोज सम श्रुति सूर्य से खिलते रहें।
वेद-चन्द्र चकोर हम, द्युति मोद से मिलते रहें ॥
वेद ही स्वामी सखा सब, वेद ही परिवार है ॥६॥

वैदिक धर्म विशारद, श्री सूर्यदेव शर्मा

ज्वलन्त प्रश्न

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज या आर्यसमाज मन्दिर

- पं. उमेद सिंह विशारद.

महाभारत काल के बाद भारतवर्ष में ईश्वरीय व्यवस्थानुसार ईश्वरीय वाणी वेदों की ओर लौटाने तथा वैदिक धर्म अर्थात् सत्य सनातन वैदिक धर्म का मार्ग बताने वाले केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ही थे। भारतवासी धार्मिक अन्धविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों व भ्रष्ट राजनीति के गहरे संस्कारों में जकड़े हुए थे। महर्षि दयानन्द जी दूरदर्शी थे, उन्होंने समाज की तमाम बुराईयों को दूर करने के लिए एक वैचारिक क्रान्ति का संगठन "आर्यसमाज" बनाया। आर्यसमाज अर्थात ऐसे लोगों का संगठन जो सदैव बुराईयों को दूर करने में सहायक हो सकते हैं। आर्यसमाज एक राष्ट्रीय संगठन है।

महर्षि दयानन्द जी ने भारत को ऐसा मंच दिया जो भारत की दिशा और दशा सुधारने में सक्रिय हो उठा। यह ऐतिहासिक सत्य है कि इस आर्यसमाज ने भारत को स्वतन्त्र करा दिया। स्वतन्त्रता संग्राम में सर्वाधिक बलिदान आर्य समाजियों ने दिया था। आर्यसमाज की स्थापना से लेकर सन् १९५७ तक आर्यसमाज का क्रान्तिकारी युग था, उसको हम आर्यसमाज का स्वर्णिम युग भी कह सकते हैं। आर्यसमाज का सदस्य बनना भी एक गौरव की बात होती थी, क्योंकि आर्यसमाज के सदस्य का चरित्र अत्यन्त प्रेरणादायक, सत्यवादी, राष्ट्रवादी, ईश्वरवादी व शुद्ध समाजवादी होता था। एकनिष्ठा एवं समर्पण की भावना साधारण सदस्य तक में होती थी। प्रत्येक आर्य अपने आप में चलता-फिरता क्रान्ति का बिगुल बजाने वाला आर्यसमाज था। स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यों ने सर्वाधिक बलिदान किये।

उन्होने समाज में तमाम धार्मिक अन्धविश्वास, रुढ़ि परम्पराएँ एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध एक वैचारिक आन्दोलन चला दिया तथा ज्ञानमार्ग चुनकर अनेक विषयों पर तत्कालीन मठाधीशों से शास्त्रार्थ करके एक नई ज्योति जगा दी। धार्मिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र, राजनैतिक क्षेत्र के महन्तों को सोचने पर मजबूर कर दिया। उनकी सदियों से जमीं जड़ें हिलाकर रख दी। उन ८२ वर्षों में आर्यसमाज ने एक अपना नया इतिहास रचा और महर्षि दयानन्द क कार्यों को पहली श्रेणी में रखा। हम उन वर्षों को आर्यसमाज का बलिदानी युग भी कह सकते हैं।

१९५७ से २०२० तक ६३ वर्षों का आर्यसमाज

आर्यसमाज ने भारत को स्वतन्त्र करा दिया तथा स्वतन्त्रता मिलते ही आर्यसमाज का आन्दोलन धीमा पड़ गया। क्यों ? क्या चुनौतियाँ समाप्त हो गयी ? क्या हम सचमुच में ही स्वतन्त्र हो गये ? क्या महर्षि दयानन्द का सपना पूर्ण हो गया ? आर्यसमाज की प्रासंगिकता कब तक बनी रहेगी ? आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्यों के साथ हमें इन बिन्दुओं पर गंभीरता से विचार करना होगा। आर्यसमाज एक अनुपम आन्दोलन है। संस्था को जीवित रखने के लिये मूल उद्देश्यों के प्रति सतत् आन्दोलन और उनका क्रियान्वयन आवश्यक होता है। आर्यसमाज का सामाजिक आन्दोलन शनैः-शनैः मरने लगा है और आर्यसमाज पर रूढ़िवाद की जंग लगने लगी है। कालान्तर में यह रूढ़िवाद की जंग आर्यसमाज संगठन को एक सम्प्रदाय का रुप दे सकती है।

आर्यसमाज के पदाधिकारी भी विद्वानों से कहते हैं - तर्क की बात मत करो, खण्डन मत करो, अन्य बुरा मान जायेंगे। विद्वान् मंचों से भींच-भींच कर बात करते हैं, क्योंकि आर्यसमाज का वर्तमान युग नेतृत्व पर प्रभावी है। सिद्धान्तों पर कहीं न कहीं समझौता हावी होता जा रहा है।

आर्यसमाज के सिद्धान्त आर्यसमाज के तथाकथित मंदिरों में कैद होकर रह गये हैं। शास्त्रार्थ की परम्परा समाप्त हो गयी है।

मैं आर्यसमाजी संन्यासियों, विद्वानों एवं इसके प्रति पूर्णतः समर्पित महारथियों को अपवाद मानते हुए निस्संकोच कहना चाहता हूँ कि आ आर्यसमाजी दूसरे लोगों के साथ या तो समन्वय स्थापित करने में लगा है, या फिर दूरदर्शिता के अभाव में आर्यसमाज व अन्य मत-मतान्तरों में अंतर न करके आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति नीरस होता जा रहा है। अधिकांश आर्य परिवारों में जहां वैदिक पताकाएँ लहराती थीं, उनमें आज गणेशजी व अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां पूजी जाती हैं। आर्य परिवारों में मिली-जुली पूजा हो रही है। यह आर्यसमाज के भविष्य के लिए चिंता का विषय है।

आर्यसमाज, आर्यसमाज मन्दिरों में परिवर्तन होने से हानि

महर्षि दयानन्द जी ने यज्ञ को देव यज्ञ कहा है और यह यज्ञ क्रिया आध्यात्मिक तथा व्यक्तिगत पर्यावरण को शुद्ध करने तथा वेद मंत्रों की रक्षा करने व उस परमपिता के सतत आभास हेतु प्रारम्भ की। यह यज्ञ सार्वजनिक प्रदर्शन की क्रिया नहीं है, किन्तु आर्यसमाज केवल बड़े-बड़े यज्ञों के प्रदर्शन को ही प्रचार समझ रहा है। यह ठीक है कि जनसंख्या के आधार पर आर्यसमाज भवनों की अत्यधिक बढ़ोतरी हुई है। यह भी सत्य है कि आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता आर्यसमाज के भवनों की देख-रेख को ही आर्यसमाज का कार्य समझ रहे हैं और अपनी तसल्ली के लिये महर्षि दयानन्द जी के नारे लगाकर सन्तुष्ट हो रहे हैं। सनातनी मन्दिरों में रोज मूर्तियों की पूजा होती है, आर्यसमाज के मन्दिरं में हवन द्वारा होती है। फर्क केवल यह है कि सनातनी मूर्तिपूजक है व आर्यसमाजी ईश्वर को पूजते हैं। पद-लोलुपता, प्रभावशील व्यक्तित्व एवं परस्पर दोषरोपण से आर्यसमाज मूल उद्देश्यों से भटक रहा है। अर्थात् आर्यसमाज मन्दिरों में परिवर्तित होने के कारण मन्दिरों में कैद हो गया है।

आर्यसमाज संगठन को अंगड़ाई लेनी ही पड़ेगी

लाखों वर्ष के स्वर्णकाल के पश्चात् पिछले हजारों वर्षों से भारत ने पतन की पीड़ा झेली है। आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द जी द्वारा इस पीड़ा से मुक्ति दिलाने की दिशा में बोया गया बीज है। भारत की स्वतन्त्रता का पौधा आज लहलहा रहा है। यह १० अप्रैल १८७५ को की गई आर्यसमाज की स्थापना का ही सुपरिणाम है। यह स्पष्ट है कि आर्यसमाज के लिये आने वाला समय अधिक महत्वपूर्ण होगा।

अव्यवस्था अति का दूसरा नाम है। संसार में इस समय अव्यवस्था है, अनीति है, अनाचार है। यह संसार व्यवस्था, नीति और सदाचार के लिये तड़प रहा है। इस तड़प को केवल आर्यसमाज ही शान्त कर सकता है। आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है। चुनौती को स्वीकार करके और उद्यमशील, पुरुषार्थी होकर व आर्यसमाज के मन्दिरों की चारदीवारी से बाहर आकर कार्य करने की आवश्यकता है। आर्यसमाज को प्रचार के लिये मीडिया को माध्यम बनाना होगा। आज मीडिया का युग है। मेरे इस लेख का उद्देश्य आर्यसमाज के विकास हेतु अत्यधिक कार्य करने के लिये कार्यकर्त्ताओं से प्रार्थना करना मात्र है।

पानी

आओ तुमको आज सुनाऊँ बच्चों एक कहानी।
अनमोल तत्व जो दिए ईश ने उनमें से है पानी॥
पानी ब्रह्माण्ड बना है जीव जगत सब फैला।
पानी से आबाद हुआ है दुनिया का ये मेला।
पानी है तो जीवन है ये कहते गुरुवर ज्ञानी॥१॥
पानी से खुशबु फूलों की पानी से जलचर जीते।
पानी से हरियल भूमि है पानी से नभचर उड़ते॥
पानी से ही प्राणवान है मानव ज्ञानी ध्यानी॥२॥
नदी नालों और तालाबों से भूषित धरती माता।
जल की कलकल ध्वनि वाला मौसम सबको भाता॥
पानी जैसा जग में कोई नहीं ज्ञानी॥३॥

हमारी जाति-मानव है

- दाऊ आनंद कुमार, पत्रकार, रायपुर

दृष्टिकोण

गुरु गोविन्द सिंह का कहना है - मानस की जात सब एक ही पहचानबो वेदों में लिखा है माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या: अर्थात् धरती हमारी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। हम सभी मानव तो धरती की संतान हैं तो हमारी जात अलग कहां से हुई। इसलिये हमारी जाति-मानव है।

जात देश अउ सम्प्रदाय, मानवता के शत्रु आय, आर्यों ने जो वर्ण व्यवस्था बना वह कर्मानुसार हुआ करती थी। फलस्वरुप एक सामाजिक समस्या बनी हुई थी, इसके कई मायने थे। योग्यता और आचरण के अनुसार व्यक्ति व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा हुआ करती थी। अर्थात् शूद्र का बच्चा अच्छे आचार-व्यवहार के चलते ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी था। इसके चलते कोई कार्य घृणित नहीं होता था। इसी वर्ण व्यवस्था के चलते आर्यत्व का सारे विश्व में डंका बजाता रहा, इसके प्रमाण है कि हमारे देवी-देवाताओं केनाम के साथ कोई जाति सूचक शब्द नहीं होता था यथा - ब्रम्हा, विष्णु, महेश, हनुमान, नरसिंह, राम, कृष्ण, बलराम, लक्ष्मी, सरस्वती, काली, दुर्गा, पार्वती आदि सन्तों और महापुरुषों के नाम कालिदास, कबीर, वाल्मीकि, तुलसीदास, बिहारी, भूषण, कौटिल्य, भवभूति, बाणभट्ट आदि कोई सरनेम नहीं लिखा जाता था जैसे साहू, वर्मा, शर्मा, निषाद, ठाकुर आदि।

ई. सन् ६१० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में मुस्लिम शासन की नींव डाली, तब से आर्यों में हीन भावना विकसित हुई, तब तक आर्यों में आपसी वैमनस्यता बढ़ गई थी, मुस्लिम धर्म अपना लेने वालों ने अपने आपको आर्य कहना नहीं छोड़ा, इसलिये आर्य अपने आपको हिन्दू कहने लगे तब श्रेष्ठ वर्ण के लोगों ने कर्मानुसार वर्ण को जन्मना जाति का रूप दे दिया इस तरह जातिवाद का ताण्डव शुरु हुआ। फलस्वरुप बाहर से आने वाले मुट्ठी पर मुस्लिमों ने ७०० वर्षों तक शासन किया। अंग्रेजों ने भी २०० साल राज किया, जातिवाद के चलते संवर्णों का शूद्रों के प्रति छुआछूत और हीनभावना के कारण हिन्दू समाज की फूट का पूरा लाभ मुस्लिम और ईसाई ने प्रलोभन देकर इफरात धर्मान्तरण किया जिससे शूद्रों ने हिन्दूतर धर्मों को अपनाने में सम्मान और फायदा देखा १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात अंग्रेजों ने भारतीयों में आजादी की लालसा तद्नुरुप संगठित होने की भावना का अनुमान लगा लिया था अतः भारतीयों में जातीय वैमनस्य को पनपाकर उन्हें तोड़े रखने के लिये अंग्रेजों ने १८७१ की जनगणना में जाति को आधार बनाया, मजहबी आधार पर अंग्रेजों ने देश के दो टुकड़े करवा ही दिए, हिन्दुओं की पांच हजार छोटी-बड़ी जातियाँ शासन को औंधा करके रखी हैं, जातिगत आरक्षण की नीति ने आग में घी का काम किया है वोटों के लालच में सभी राजनैतिक पार्टियाँ आरक्षण के कोटे में वृद्धि करने का प्रलोभन देने में जुटी है सभी जातियां चाहती हैं कि उन्हें भी आरक्षित श्रेणी में गिना जाये, जिन्हें आरक्षण है वे और ज्यादा अक्सर और सहूलियतों के लिये लालायित है एक तरफ काबिलों की उपेक्षा और अपेक्षाकृत नालायकों की शासन-प्रशासन, नौकरी, शिक्षा, रोजगार में प्राथमिकता के फलस्वरुप सभी तरफ भ्रष्टाचार और अक्षमता का दृश्य उपस्थित हो गया है। अनारक्षित जातियों ने पुरुषार्थ कर सरकार पर आश्रित न होते हुए तरक्की करने की ठान लिया है। आज भी इसीलिये ६९ वर्षों से आरक्षण का लाभ लेने वाली जातियों के डाक्टर, इंजीनियर, वकील, सी.ए. की

स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा में नहीं के बराबर है, उद्योगपति, व्यवसायी तो हैं ही नहीं क्योंकि आरक्षण के कारण उन जातियों में अकर्मण्यता और परावलम्बियां पनप चुकी है। इस आरक्षण की नीति की वजह से ५० लाख से ज्यादा भारतीय विदेशों में जाकर बस गए हैं और अपनी प्रतिभा और पुरुषार्थ से बुलंदियों को छू रहे हैं मुझे एक ऐसी जाति के बारे में पता है जो अपने आपको क्षत्रिय कहते थे लेकिन जब उनकी जाति पिछड़ा वर्ग में शामिल की गई तो सारी सुविधाओं का लाभ लेने के लिये तथाकथित क्षत्रिय दौड़ पड़े।

आजादी के नेता अधिकांशतया सवर्ण थे, उन्होने यह सोचा कि ८५ प्रतिशत शूद्रों को एक नहीं रहने देना चाहिए इसलिये आरक्षण की नीति शुरू से अपनाई गई। नेशनल असेम्बली के जमाने से आरक्षण की नीति जारी है। १९३१ में अनुसूचित जाति को तथा १९४२ में अनुसूचित जनजातियों को लोकसभा, विधानसभा चुनावों तथा नौकरियों में आरक्षण दिया जाने लगा। १९९३ में मंडल कमीशन लागू करते हुए पिछड़ा वर्ग को भी नौकरियों में आरक्षण मिलने लगा। अब यह रोग मुसलमानों को भी लगा है और उन्हें राज्य स्तर पर कहीं-कहीं आरक्षण मिलना शुरू हो गया है। अब जाति आधारित आरक्षण की देखादेखी लिंग आरक्षण का बीज भी रोपित हो गया है। राज्यसभा में ३३ प्रतिशत लोकसभा, विधानसभा सीटों पर महिलाओं के लिए आरक्षित करने का बिल पारित हो गया है और लोकसभा में भी पारित हो जायेगा। भारतवर्ष अब आरक्षण वर्ष बन गया है, जिसे आरक्षण मिला उसका सर्वनाश होगा ही। आरक्षण के इतने लम्बे कालावधि में ऊंगली में गिने जाने लायक परिवार ही लाभ उठाते रहे। सारा समाज वहीं हैं इन सबका एकमात्र इलाज है अन्तर्जातीय विवाह इससे जातिवाद अपने आप समाप्त हो जायेगा, सरकारी तुष्टीकरण का यह क्या शानदार अंदाज है कि इधर जातिवाद को उभारने के लिये आरक्षण दे रही है और उधर अन्र्तातीय विवाह करने वाले को पुरस्कार भी देती है। तुम भी खुश और हम भी खुश सारे राजनैतिक पार्टियों का कमोवेश एक ही हाल है। १९३१ की जनगणना में भी अंग्रेज और कांग्रेस दोनों जातिगत आधार के लिए असहमत थे जो अब तक जारी है अब वही कांग्रेस ने जातीय जनगणना पर सहमति जता दी है। वोट के लिए जीने वाले सारे राजनैतिक दलों ने भी परंतु लगाकर सहमति दिखाई है, जनगणना में जात गिनाकर देश को और नरक न बनाओ।

सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह का कहना है - मानस की जात सब एक ही पहचानबो वेदों में लिखा है माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः अर्थात् धरती हमारी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। हम सभी मानव तो धरती की संतान हैं तो हमारी जात अलग कहां से हुई। इसलिये हमारी जाति-मानव है।

भजन

हमें रोशनी की झलक इक दिखा दो।
कि दूर जिन्दगी से अंधेरे हो जायें॥
विपदा में बीती यहां हर घड़ी है
जन्मों की मन पर मैल चढ़ी है
हमें साधना का सावन दो धारे
हम साफ सुथरे सबेरे हो जायें।
हमें रोशनी ....
हम परमार्थ पथ से भटक गये हैं
हम स्वार्थ की झाड़ी से अटक गये है
हमें ज्ञान ज्योति दे दो प्रभो जी
भाव सागर से हम किनारे हो जायें
हमें रोशनी ....
भूल भुलियों में हम खो ना जायें
चरणों से तेरे दूर हो ना जायें
दृष्टि दया की सदा हम पे रखना
तुम्हारे लिये हैं तुम्हारे हो जायें॥
हमें रोशनी ....

स्व.मोहनलाल चड्ढा

क्या ईश्वर ही पार लगायेगा ???

चेतना

– आचार्य आर्यनरेश,
वैदिक गवेषक

जब से अनार्य अवैदिक युग की प्राप्ति हुई है तब से अज्ञानयुक्त गुरुओं के वाक्यों को मन्त्र समझा जाने लगा व पाखण्डी, झूठे चमत्कारों और व्रतों ने धार्मिक कहलाने वाले लोगों की बुद्धि पर असत्य का पर्दा डाल दिया। ईश्वरीय गायत्री आदि मन्त्रों का पाठ करने वाले लोग भी आज यही समझते हैं कि **'धियो यो नः प्रचोदयात्'** का पाठ करने मात्र से भगवान स्वयमेवहमारे सारे कष्टों को, उलझनों व समस्याओं को दूर कर देगा। हमें मन्त्रपाठ को छोड़ कर कुछ करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि भगवान सर्वशक्तिमान है। यह मत भूलो कि ईश उसी का कल्याण करता है जो स्वयं भी पुरुषार्थ करता है। यह ध्रुव सत्य है कि जो निराकार, सर्वव्यापक, सृष्टिकर्ता, वेदज्ञानदाता, चेतनशक्तिरूप प्रभु को छोड़कर किसी चौथे, सातवें परमधाम वाले एवं ब्रह्मधामी अविद्यमान की प्रार्थना करते हैं वे तो वहां न होने से सुनते ही नहीं, क्योंकि आसमान में चौथे, सातवें एवं ब्रह्मधाम आदि स्थान की विद्यमानता को विज्ञान भी नकारता है। जो सच्चे 'ओम' ईश्वर को छोड़कर उसके दिवंगत भक्तों ब्रह्मा, शिव, राम, कृष्ण व कार्तिकेय आदि की प्रार्थना में गत २-३ हजार वर्षों से संलग्न है उनकी भी प्रार्थना व्यर्थ है क्योंकि वे सुनने वाले संसार से कभी के जा चुके हैं। यदि वे सब होते तो न तो इनके हिन्दू भक्तों के सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा व काशीनाथ आदि मुसलमानों द्वारा तोड़े जाते एवं न ही अल्लाह और गॉड को मानने वालों का अब तक अमेरिका, ईजराइल, लीबिया, सीरिया, बंगलादेश, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इराक आदि में लाखों ईसाईयों एवं मुसलमानों का रक्त ही बहता, काश वे सच्चे 'ओम्' के भक्त बनते।

इन दोनों को छोड़ तीसरे प्रार्थना करने वाले लोगों का ईश्वर तो सच्चा व चेतन है परन्तु वे **'धियो यो नः प्रचोदयात'** का जप करते ऐसा सोचते है कि इनको तो बस प्रार्थना ही रटनी मात्र है, ये, सब कल्याण करने का कार्य ईश्वर ही करेगा। हम चाहे गोरों की चाय पीयें वा काफी गोरों की अंग्रेजी से प्यार कर अथवा पीजा से, ए.ओ. ह्यूम गोरे की बनाई कांग्रेस को वोट दें, अथवा कभी गो-राम प्रेमी पार्टी को वोट दिए बिना घर बैठे ईश स्वयं कल्याणकारी है। वह हमारी गाय और राम की वैदिक संस्कृति को बचाएगा। हम गोरी सरकार की आर्य बाहर से आए, वे गोमांस खाते थे, वेदों में जादू टोना वाले पाठ्यक्रम, जार्ज पञ्चम की स्तुति गीत जनमनगण को दिल से गाते, न्यायालयों में अंग्रेजी की गुलामी सहते, धोती, चोटी, पगड़ी व जनेऊ की उपेक्षा कर जीन्स और अर्धनग्न लिबास में रहते मात्र 'प्रचोदयात्' कहने से कांग्रेस द्वारा उत्पन्न किए मुस्लिम वोट बैंक धमाकों से स्वयं व अपने कश्मीर, असम, गोदरा, मुम्बई व डोमीनियम शिप की गुलामी व वीर सैनिकों के मान को बचा लेंगे ? पाक के सेना हमारे सैनिकों का सिर काट ले जाती है हमारे क्रिकेट व पाक प्रेमी नेता उसके प्रधानमंत्री को दावत पर बुलाते हैं।

क्या शिव जी, श्रीराम, श्रीकृष्ण, पं. चाणक्य, राणाप्रताप, छत्रपति शिवाजी, भगतसिंह, सुभाष, बिस्मिल आदि को मात्र मंत्र जाप से ही विजय मिली थी अथवा सेना द्वारा युद्ध करने से लाखों वीरों का खून बहने पर भी अपनी मूर्खता से जो आज विदेशी गोरी का राज चल रहा है उसमें एवं उन विदेशी गोरों के राज में क्या अन्तर है ? यही गोहत्या, शराब, मांस, नग्नता, व्यभिचार, अंग्रेजियत, समलैंगिकता, लिव इन रिलेशन बिना विवाह भोग, वही मुस्लिम जिहादी बम हमलों से हजारों हिन्दुओं का कत्ल, क्या देव दयानन्द, बिस्मिल, भगतसिंह, सुभाष, आजाद इसीलिए बलिदान हुए थे। आर्य पुत्रों ! प्रचोदयात् की प्रार्थना तो करो परन्तु सफलता हेतु स्वयं अंग्रेजों व मुसलमानों का चाल-चलन व खान-पान छोड़ बच्चे बच्चे तक संदेश पहुंचाओं कि इस बार गो राम हत्यारी सरकार न आने पाए।

पता: उद्गीथ साधना स्थली, डोहर (राजगढ़) सुरमौर-१७३१०१

गाथात्मक "महर्षि देव दयानन्द में मानवता कूट-कूट कर भरी थी"

- खुशहालचन्द्र आर्य

मानवता एक वह गुण है जिसमें सब गुण समाहित हो जाते हैं यानि मानवता गुण के अन्दर सब गुण समाहित हो जाते हैं, जैसे - दया, करुणा, परोपकारिता, सहृदयता, सेवा, निष्छलता, न्याय प्रियता, निर्भयता, निष्पृक्षता, निष्कपटता के साथ ही लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, मोह, अहंकार आदि से दूर रहना आदि समस्त गुण मानवता में समाहित हो जाते हैं। महर्षि जी के जीवन की कुछ घटनाओं को यहां संक्षिप्त वर्णन करके मानवता को दर्शाने का यहां प्रयत्न किया है, जो इसी भांति है।

१. दयालु महर्षि दयानन्द :- महर्षि जी सहृदयी और दयालु थे। वे किसी को कष्ट पहुंचाने की इच्छा ही नहीं रखते थे। प्रवचन के मध्य एक मद्यप ब्राह्मण ने उनके ऊपर जूता फेंक मारा, श्रद्धालु भक्त उखड़ गये। उन्होंने उसे पकड़ कर खूब पिटाई की। महर्षि जी ने स्वयं उसे छुड़वाया और बोले - "इसने अज्ञानतावश ऐसा कर दिया, इसलिए यह दया का पात्र है", इस परा उसे छोड़ दिया गया। यह घटना फर्रुखाबाद की है।

२. स्नेहशील व उदारचेता महर्षि दयानन्द :- कानपुर में गंगा पुत्रों की काफी संख्या थी। गंगा मन्दिर में जो ब्राह्मण पूजा-पाठ करते थे, उन्हें गंगा पुत्र कहकर सम्बोधित किये जाने की प्रवृत्ति वहां के निवासियों में थी। एक गंगापुत्र महर्षि जी के निवास से कुछ दूरी पर रहता था। उसका मार्ग महर्षि जी के कुटिया के सामने से होकर जाता था। उसकी नित्य क्रियाओं में से एक क्रिया यह भी थी कि जब भी वह महर्षि जी के निवास के सामने से आता-जाता तो महर्षि जी के सम्बन्ध में अपशब्दों का प्रयोग करता। महर्षि जी को इस बात की जानकारी थी,

परन्तु उन्होंने कभी आक्रोश प्रकट नहीं किया। महर्षि जी के पास श्रद्धालु जब नित्य ही फल और मिष्ठानादि लेकर आते। महर्षि जी उन्हें वहां उपस्थित सम्मजनों को वितरित कर देते। एक दिन मिष्ठानादि सामग्री बांटने के पश्चात बची रह गई। उसी समय गंगा पुत्र गालियां देता हुआ वहां से जा रहा था। महर्षि जी ने उसे बुलवाया और आदरभाव से अपने समीप आसन पर बिठाया। इसके बाद अति प्रेम से लड्डू व अन्य मिष्ठान महर्षि जी ने उसे समर्पित किये और स्नेह से बोले- "इसी समय आप नित्य आया कीजिए। भक्त लोग बहुत सी खाद्य सामग्री लाते हैं। आप भी उसमें से प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया करें।"

इसके पश्चात नित्य ही सन्ध्या समय वह गंगापुत्र महर्षि जी के पास आने लगा और महर्षि जी से प्रसाद पाकर सन्तुष्ट होता रहा। उसके मन में कभी-कभी यह शंका उठ खड़ी होती थी कि अवश्य ही किसी दिन महर्षि जी मेरे द्वारा दी जा रही गालियों की चर्चा करेंगे, परन्तु महर्षि जी ने ऐसा न किया। कभी कभी धर्म चर्चा उसके साथ अवश्य किया करते थे। महर्षि जी के ऐसे स्नेह समन्वित व्यवहार से उसे अपने किये पर पश्चाताप होने लगा और एक दिन ऐसा हुआ कि उसने महर्षि जी के चरण पकड़ अपनी त्रुटि की क्षमा कर देने की प्रार्थना उसने की।

महर्षि जी ने कहा - "वत्स"! हम इस प्रकार की बातों पर ध्यान नहीं देते। तुम भी उन बातों को विस्मरण कर दो और आनन्द से रहो। वह गंगा भक्त महर्षि जी का भक्त हो गया।

३. वितराग व तपस्वी महर्षि दयामन्द :- महर्षि दयानन्द

का जीवन त्याग और तप का पर्याय था। उन्हें संसार का कोई भी ऐषणा अपनी ओर आकर्षित कर पाने में असमर्थ थी। यद्यपि इस समय कानपुर से बहुत समृद्धजन उनके भक्तों में सम्मिलित हो गये थे और महर्षि जी के लिए हर सुख-सुविधा जुटाने हेतु तत्पर रहते थे, परन्तु महर्षि जी इन सब सुविधाओं से स्वयं को उदासीन रखते थे। कानपुर के भैरवघाट पर महर्षि जी बिना किसी बिछौने के भूमि पर लेटकर ही रात्रि व्यतीत करते थे। वैसे तो वे कम समय ही निद्रा की गोद में विश्राम पाते थे, क्योंकि उनका अधिकतर समय साधना की मस्ती में ही व्यतीत होता था। सोने के समय सिराहने के लिये वे दो ईट रख लेते थे। सदयनारायण जी उनके परमभक्त हो गये थे। उन्होने महर्षि जी से विनय कर पानी पीने के लिये एक लोटा और बांधने के लिए एक कोपीन उन्हें दे दी थी।

वे उनसे समय-समय पर वहां बने रहने का आग्रह भी करते रहते थे। परन्तु उस दिन आश्चर्य जनित उदासी उनके चेहरे पर उतर आई जिस दिन महर्षि के स्थान पर उनकी नई कोपीन और लोटा रखा मिला क्योंकि महर्षि जी उस भक्त को बिना बतलाए वहां से अन्यत्र प्रस्थान कर गये। पत्र व्यवहार के लिए भी अगला पता किसी के पास नहीं था।

४. यही मोक्ष का मार्ग है :- गंगा के किनारे एक वयोवृद्ध सन्त रहते थे। वे महर्षि जी से बड़ा स्नेह करते थे। महर्षि जी भी नित्य ही आदरभाव से उनसे भेंट करते। एक दिन उस वृद्ध सन्त ने महर्षि जी से कहा बच्चा ! यदि तुम निवृत्ति मार्ग को ग्रहण कर लेते तो इसी जन्म में तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति हो जाती। व्यर्थ ही परोपकार के चक्कर में फंस गये। अब तुम्हें मोक्ष के लिए एक जन्म और लेना होगा।

महर्षि जी ने उत्तर दिया - महाराज, मुझे भी मोक्ष की आवश्यकता है, फिर भी देश के अनेक दुःखी दरिद्र लोग जो अज्ञान के अंधेरे में भटकते हुये कष्ट पूर्ण जीवन भोग रहे हैं। मेरा उद्देश्य पहले इन्हें दुःख-दरिद्रय से मुक्ति दिलाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुजे कई जन्म भी लेने पड़े तो मैं जन्म लेने से नही बचना चाहूंगा। मेरे लिए यही मोक्ष का मार्ग हैं।

५. सत्य के मार्ग से मुझे कोई भी नहीं हटा सकता :- जेठालाल जी वकील पौराणिक वातावरण में पले थे परन्तु दुराग्रही नहीं थे। वे महर्षि जी के सत्संग में नित्य प्रति आते थे। वे वहां अवसर पाते महर्षि जी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते। वे एक दिन महर्षि जी को बोले - "महाराज आपके प्रवचन इतने मनोहारी होते है कि श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। विरोधी भी आपकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। आप अपने वक्तव्यों के विषय में थोड़ा सा परिवर्तन कर ले तो लो आपको शंकर का अवतार मानने लग जायेंगे।"

महर्षि जी हंस पड़े। उन्होने वकील साहब से पूछा- "क्या परिवर्तन कर ले जेठालाल जी ? जेठालाल जी ने कहा- आप मूर्ति पूजा का खण्डन न किया करें उसका शास्त्रोक्त विधि से मण्डन आरम्भ कर दें। महर्षि जी आपके लिए कठिन भी नहीं है।"

महर्षि जी गंभीर हो गये। बोले - "मेरे लिए असत्य भाषण सम्भव नहीं है। यदि मैं ऐसा कर पाता तो काशी नरेश मुझे विश्वनाथ मंदिर का पद देने के लिये सहर्ष उद्यत थे। वकील साहब ! संसार का कोई भी आकर्षण मुझे सत्य के मार्ग से विचलित करने में असमर्थ हैं।

६. अज्ञान के अन्धकार से निकलना मेरा धर्म है :- महर्षि जी अपने प्रवचन के पश्चात् किसी भी सज्जन से कोई भेट स्वीकार नहीं करते थे। वे विनम्रता पूर्वक श्रद्धालु भक्त को समझा देते - प्रवचन के पश्चात वक्ता को भेंट चढ़ाना आर्ष नीति के अनुकूल नहीं है। मैं अपनी पोथियों के पाठ नहीं बेचता हूँ। अज्ञान के अन्धकार से समाज को निकालना मेरा धर्म है।

७. छुआछूत के विरोधी :- महर्षि जी चासी के समीप ठहरकर कुछ समय पश्चात् अनुप शहर (बुलन्दशहर) आ विराजे। वे छूआछूत और जाति-पाति के विरोधी थे। उनका दयालु हृदय सभी को समभाव से देखता था। अनूपशहर का उमेदा नाई महर्षि जी का भक्त हो गया था। महर्षि जी का यह नियम था कि जो भक्त श्रद्धाभाव से प्रथम भोजन उनकी सेवा में ले आए, वे उसी को ग्रहण कर लेते। एक दिन उमेदा के मन में महाराज श्री को भोजन कराने की इच्छा हुई। प्रीतिपूर्वक अपनी गृहणी से भोजन बनवाकर

श्री चरणों में उपस्थित हुआ और भोजन कर लेने की प्रार्थना की। महर्षि जी ने शान्त भाव से भोजन करना आरम्भ कर दिया। उस समय महर्षि जी के समीप कुछ ब्राह्मण भी धर्म चर्चा का आनन्द ले रहे थे। उन्होंने आश्चर्य से महर्षि जी की ओर देख कर कहा - महर्षि जी आप क्या कर रह हैं ? यह तो नाई है। आप नाई की रोटियां खाँ रहे हैं।

महर्षि जी ने उनकी ओर बिना देखे ही उत्तर दिया- "नही मैं नाई की रोटियां नहीं खा रहा हूँ। मैं तो गेहूँ की रोटियाँ खा रहा हूँ।"

८. महर्षि दयानन्द की दया :- एक पाठशाला में पंडित जी पढ़ाते थे। उन्होंने अपने छात्रों से कहा कि हम सभी कथा सुनने चलेंगे। तुम अपनी पुस्तको के थैलों में ईट-रोड़े और पत्थर भर कर वहां बैठना। जब मैं तुम्हें संकेत करुं, उसी समय कथा करने वाले पंडित के ऊपर कंकड़-पत्थर बरसा देना फिर हम तुम्हें लड्डू देंगे। यह पंडित उन बच्चों को लेकर महर्षि जी की सभा में पहुंच गया। सांझ होते ही उसने छात्रों से संकेत कर दिया। बच्चों ने महर्षि जी पर कंकड़-पत्थर फेंकने आरम्भ कर दिये। उनमें से कुछ बच्चों को पुलिस पकड़ कर महर्षि जी के सामने प्रस्तुत कर दिया। बच्चे डर रहे थे। महर्षि जी ने प्यार से पूछा - "तुम हमारे ऊपर पत्थर क्यों फेंक रहे थे ?" बच्चों ने पंडित द्वारा कही गई सारी बातें महर्षि जी को बता दी। महर्षि जी ने कहा - "इसमें इन बच्चों का क्या दोष है, इन्होंने तो अध्यापक ने जसा कहा वैसा काम किया। बच्चों ने तो अपना काम पूरा किया है। इनको तो लड्डू मिलने ही चाहिए। महर्षि जी ने अपने किसी भक्त से लड्डू मंगवाये और बच्चों को देकर उनको खुशी-खुशी बिदा किया।"

महर्षि जी अपने भोजनादि के लिए भी कभी किसी को नहीं कहते थे। श्रद्धालु लोग स्वयं ही महर्षि जी की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते थे। कहीं प्रबन्ध न हो तो वे खिचड़ी, चने-चबाने आदि से ही अपना काम चला लेते थे। ऐसे थे मेरे प्यारे ऋषि ! ये कुछ घटनाएं जो महर्षि जी के जीवन के तप, त्याग व बलिदान का साक्षात प्रमाण है।

पता - गोविन्द राम आर्य एंड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता-७००००७

धिग्धिग्गृहस्थाश्रमम्

क्रोशन्तः शिशवः सवारि सदनं पङ्कावृत्तं चाङ्गणं
शय्यादंशवती च रूक्षमशनं धूमेन पूर्णं गृहम् ।
भार्या निष्ठुरभाषिणी प्रभुरपि क्रोधेन पूर्णः सदा
स्नानं शीतलवारिणा हि सततं धिग्धिग्गृहस्थाश्रमम् ॥ (माघ)

भावार्थ - गृहस्थाश्रम को जहाँ स्वर्ग माना गया है - वहाँ परिस्थितियों की क्रूरता के कारण महाकवि माघ ने उसका स्वरूप नर्क से भी बढ़कर दर्शाया है। जरा दृष्टिक्षेप कीजिए - बच्चे जहां, बिलख रहे हों, उनके संरक्षण की कोई उचित व्यवस्था न की जा सके, रहने का मकान जहाँ जल से परिपूरित हो, (गीला हो) कीचड़ से आंगन सन्नद्ध हो। शयन करने के बिस्तरे भी जहां खटमल एवं मच्छरों से भरे पड़े हो, आहार सदैव रूखा सूखा मिले (घृतादि व अच्छे पदार्थों के दर्शन तक न होवें) घर सदा धुएँ से परिपूर्ण रहे (धुआँ ही धुआँ सदा जिस घर में भरा रहे) पत्नी कठोर-निष्ठुर वचन बोलने वाली हो, स्वामी की जिस पर हमेशा कुदृष्टि रहे, (क्रोध ही क्रोध करे) और बारह महीने लगातार स्नान के लिए जल भी जिसे ठण्डा ही प्राप्त होवे इस प्रकार के गृहस्थाश्रम को धिक्कार है - धिक्कार है।

- सुभाषित सौरभ

ज्वलन्त प्रश्न

यज्ञ से रोग चिकित्सा तथा रोगकारी विषैले कीटाणु व वायरसों का नाश

- मनमोहन कुमार आर्य

वेदों में ईश्वर ने संसार के सभी मनुष्यों को यज्ञ करने की प्रेरणा की है। यज्ञ से रोगों व विषैले कीटाणुओं का नाश होता है इसकी प्रेरणा भी ईश्वर ने की है। यज्ञ में आम की तथा कुछ अन्य वृक्षों की समिधाओं वा काष्ठों को जलाकर उसमें वेदमन्त्रों की जीवनोपयोगी प्रार्थनाओं को बोलकर गोघृत, देशी शक्कर, वनस्पति व औषधियों सहित सुगंधित एवं पोषण प्रदान करने वाले पदार्थों की आहुतियां दी जाती है। इसका प्रभाव भी नासिका से प्रत्यक्ष अनुभव किया जाता है। यज्ञ से दुर्गन्ध का नाश होता है एवं सुगंध का वायुमण्डल के बहुत बड़े भाग में प्रसार होता है। यज्ञ से वायु सहित वर्षाजल की शुद्धि होती है। यज्ञ से रोगकारक कीटाणु बैक्टिरियाओं तथा वायरसों का नाश भी होता है। यह बातें वेदों में कही गई हैं। हमारे देश में अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति को अनेक कारणों से स्थापित किया गया तथा आयुर्वेद को समाप्त करने को षड्यंत्र किये गये हैं। इसके पीछे एक विशेष सोच रही है। यदि आयुर्वेद को महत्व दिया जाता, आयुर्वेद पर अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति के समान ही अनुसंधान व शोध कार्य होता तो आज आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति अग्रणीय चिकित्सा पद्धति हो सकती थी। स्वामी रामदेव एवं पतंजलि योगपीठ का धन्यवाद है जिन्होंने आयुर्वेद को पुनर्जीवित व पुनस्थापित किया, जिससे आज आयुर्वेद का भी डंका देश विदेश में बज रहा है। आज पतंजलि के आयुर्वेदिक दंतमंजन दन्तक्रान्ति तथा रक्तचाप की दवा मुक्तावटी सहित अनेक औषधियों का सेवन देश व विश्व में लोग करते हैं। देश के लोग पतंजलि योगपीठ द्वारा प्रसारित गोघृत का विश्वासपूर्वक प्रयोग करते हैं। कपाल भाति, अनुलोम-विलोम आदि प्राणायामों सहित योगासनों ने तो पूरे विश्व में एक क्रान्ति उत्पन्न की है। इसका श्रेय स्वामी रामदेव सहित भारत के प्रधानमंत्री जी को भी है।

यज्ञ करने से रोग होते नहीं है और किसी को हो जाये तो वह दूर हो जाते हैं। वेदों के ऋषितुल्य शीर्ष विद्वान् आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार जी का वैदिक यज्ञ चिकित्सा विषय पर एक विस्तृत लेख है। उनकी पुस्तक यज्ञ, मीमांसा भी अपने विषय का उत्तम ग्रन्थ है। अपने लेख में आचार्य जी ने लिखा है भारतीय विचारधारा के राम-रोम में ओतप्रोत यह यज्ञ दो दृष्टियों से अपनी महत्ता रखता है, एक तो भावना की दृष्टि से, दूसरे बाह्य लाभों की दृष्टि से। भावना की दृष्टि से यज्ञ मनुष्य के अन्दर त्याग, समर्पण, परोपकार, उर्ध्वगामिता, आन्तरिक शत्रुओं का दमन, तेजस्विता, देव-पूजा, शान्ति, संगठन आदि भावनाओं को उद्बुध करता है। बाह्य लाभों की दृष्टि से यह वायुमण्डल को शुद्ध करता है और रोगों तथा महामारियों को दूर करता है। इसके आगे उन्होने यज्ञ को अनेक लाभों का वर्णन किया है जो पढ़ने योग्य है।

आचार्य जी के उपर्युक्त लेख में प्रथम- **"रोगोत्पादक कृमियों का विनाश"** शीर्षक देकर इनसे संबंधित वेद प्रमाण दिये है और उन वेद प्रमाणों की व्याख्या की है। हम समझते हैं क्रिरोगोत्पादक कृमियों में सभी प्रकार के सूक्ष्म कीटाणु बैक्टिरिया एवं वायरस आदि आते हैं। आचार्य जी लिखते हैं कि अथर्ववेद १.२३१-३२, ४३७ तथा ५.२३, २९ में अनेक प्रकार के रोगोत्पादक कृमियों का वर्णन आता है। वहां उन्हें यातुधान, क्रव्याद, पिचाश, रक्षः आदि नामों से स्मरण किया गया है। ये श्वास-वायु, भोजन, जल आदि द्वारा मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होकर या मनुष्य को काटकर शरीर में रोग उत्पन्न करके उसे यातना पहुंचाते हैं, अतः ये यातुधान है। शरीर के मांस को खा जाने

के कारण यह **क्रव्याद** या **पिशाच** कहलाते हैं। इनसे मनुष्य को अपनी रक्षा करनी आवश्यक होती है, इसलिए ये **रक्षः** या **राक्षस** हैं।

यज्ञ द्वारा अग्नि में कृमि-विनाशक औषधियों की आहुति देकर इन रोगकृमियों को विनष्ट कर रोगों से बचा जा सकता है। अथर्व. १.८ में कहा है।

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवावहत् ।
य इदं स्त्री पुमानक हि स स्तुवतां जनः ॥

"अग्नि में डाली हुई यह हवि रोगकृमियों को उसी प्रकार दूर बहा ले जाती है, जिस प्रकार नदी पानी के झागों को। जो कोई स्त्री या पुरुष इस यज्ञ को करे, उसे चाहिए कि वह हवि डालने के साथ मन्त्रोच्चारण द्वारा अग्नि का स्तवन भी करे। हे प्रकाशक अग्ने, गुप्त से गुप्त स्थानों में छिपे बैठे हुए भक्षक रोगकृमियों के जन्मों को तू जानता है। वेदमन्त्रों के साथ बढ़ता हुआ तू उन योगकृमियों को सैकड़ों वधों का पात्र बना।"

इस वर्णन से स्पष्ट है कि मकान के अन्धकारपूर्ण कोनों में, सन्दूक-पीपे आदि सामान के पीछे, दीवार की दरारों में तथा गुप्त स्थानों में जो रोग कृमि छिपे बैठे रहते हैं, वे कृमिहर औषधियों के यज्ञीय धूम से विनष्ट हो जाते हैं।

अथर्ववेद ५.२९ से इस विषय पर और भी अच्छा प्रकाश पड़ता है।

अक्ष्यौं निविध्य हृदयं निविध्य जिह्वा
नितृन्दधि प्र दतो मृणीहि ।
पिशाचो अस्य यतमो जघास अग्ने
यविष्ठ प्रति तं शृणीहि ॥

हे यज्ञ, जिस मांस भक्षक रोगकृमि ने इस मनुष्य को अपना ग्रास बनाया है, उसे तू विनष्ट कर दे। उसकी आंखें फोड़ दे, हृदय चीर दे, दांत तोड़ दे।

आमे सुपक्वे शबले विपक्वे,
यो मा पिशाचो अशने ददम्भ ॥
क्षीरे मा मन्थे यतमो ददम्भ,
अकृष्टपच्ये अशने धान्ये यः ॥
अपां मा पाने यतमो ददम्भ,
क्रव्याद यातूनां शयने शयानम् ॥
दिव मा नक्तं यतमो ददम्भ,
क्रव्याद यातूनां शयने शयानम् ॥
तदात्मना प्रजया पिशाचा,
वियातयन्तामगदोऽमस्तु ॥

कच्चे, पक्के, अधपके या तले हुए भोजन में प्रविष्ट होकर जिन मांसभक्षक रोगकृमियों ने इस मनुष्य को हानि पहुंचायी है, वे सब रोगकृमि है यज्ञाग्नि, तेरे द्वारा सन्तति सहित विनष्ट हो जायें, जिससे कि यह नीरोग हों। दूध में, मठे में बिना खेती के पैदा हुए जंगली धान्य में, कृषिजन्य धान्य में, पानी में, बिस्तर पर सोते हुए, दिन में या रात में जिन रोगकृमियों ने इसे हानि पहुंचायी है, वे सब हे यज्ञाग्नि, तेरे द्वारा सन्तति सहित विनष्ट हो जावें, जिससे यह हमारा देह नीरोग हों।

इसके पश्चात आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी ने ज्वर चिकित्सा, उन्माद चिकित्सा, गण्डमाला चिकित्सा, क्षयरोग या राजयक्ष्मा की चिकित्सा, गर्भदोष निवारण सहित अन्य अनेक रोगों के निवारण पर वेदमन्त्र प्रस्तुत कर उनके हिन्दी में अर्थ दिये हैं। आचार्य जी ने अपने इस लेख में यज्ञ द्वारा रोग निवारण की प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला गया है। आयुर्वेद के ग्रन्थों से भी उन्होंने यज्ञ चिकित्सा तथा रोग के कृमियों के नाश पर प्रकाश डाला है।

आचार्य जी ने लेख का जो उपसंहार दिया है उसे भी हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। संस्कृत के अथर्ववेद एवं गोपथ ब्राह्मण के प्रमाण हम छोड़ रहे हैं। पाठ्य पुस्तक में देख सकते हैं। आचार्य जी लिखते हैं कि शास्त्रीय प्रमाणों से हमने यह प्रतिपादित करने का यत्न किया है कि यज्ञ द्वारा समस्त रोगों का निवारण सम्भव है। किस रोग में किन पदार्थों की हवि हितकर होगी इसका वैद्य विदवन्मंडली को अधिकाधिक अनुसंधान करना चाहिये। अथर्ववेद में गूगल, कुष्ठ, पिप्ली, पृश्निपर्णी, सहदेवी, लाक्षा, अजश्रृंगी आदि कतिपय औषधियों का माहात्मय वर्णन मिलता है। हवन सामग्री में गूगल का प्रयोग प्रायः किया जाता है। उसके विषय में अथर्ववेद के मन्त्र १९.३८ में कहा गया है कि जिस मनुष्य को गूगल औषध की उत्तम ग्रन्थ प्राप्त होती है, उसे रोग पीड़ित नहीं करते और आक्रोश उसे नहीं घेरता।

यज्ञ द्वारा रोग-निवारण शास्त्रकारों की कोरी कल्पना नहीं है। प्राचीनकाल में रोग फैलने के समयों में बड़े-बड़े यज्ञ किए जाते थे और जनता उसे आरोग्य लाभ करती थी। इन्हें भैषज्ययज्ञ कहते थे। गोपथ ब्राह्मण उ. १.१९ में लिखा है कि जो चातुर्मास्य यज्ञ है, वे भैषज्य यज्ञ कहलाते है, क्योंकि रोगों को दूर करने के लिए होते हैं। ये ऋतुसन्धियों में किए जाते हैं, क्योंकि ऋतुसन्धियों में ही रोग फैलते हैं।

वर्तमान काल में भी वर्षा, शरद् और बसंत के आरम्भ में बड़े व्यापक रुप में रोग और महामारियां फैलती है, जिनके निवारण के लिए जनता और सरकार का करोड़ों रुपया व्यय हो जाता है, तो भी वे बीमारियां पूर्णतः नहीं रुक पाती। यज्ञ एक ऐसा उपाय है जिससे स्वल्प व्यय में महान् लाभ प्राप्त किया जा सकता है। जब सर्दी-जुकाम, मलेरिया, चेचक आदि रोग फैलने का समय हो, तब यदि घर-घर में उन रोगों के निवारण के लिए आयुर्वेद द्वारा निर्दिष्ट उपयोगी औषधियों से प्रतिदिन यज्ञ किए जाया करें तो सारा वायुमंडल उन रोगों के प्रतिकूल हो जाए और कहीं वे रोग न फैले। भिन्न-भिन्न ऋतुओं में भिन्न-भिन्न रोग उद्‌भूत होते हैं। किसी ऋतु में वात प्रकुपित होता है, किसी में पित्त, किसी में कफ। उन उन प्रकापों के शमन के अनुकूल हवन सामग्री का प्रयोग करना उचित है। वेद में भी ऋत्वनुकूल हवन सामग्री का विधान है, "देवानां पाथ **ऋतुथा हवींषि ॥**" (अथर्व. ५.१२, १०) यहां पर आचार्य जी का लेख समाप्त होता है।

रोग का कारण कृमि, कीटाणु, बैक्टिरिया या वायरस आदि होते हैं। रोग न हो इसके लिये मांसाहार का सर्वथा त्याग किया जाना चाहिए। मनुष्य का शरीर वनस्पतियों, गोदुग्ध आदि पदार्थों सहित फलों व मेवों के सेवन के लिये बना है, मांसाहार करने के लिये नहीं। यदि हम मांसाहार नहीं करेंगे तो हम रोगों से बचे रह सकते हैं। सरकार तथा मेडिकल साइंस के वैज्ञानिकों को देखना चाहिये कि मांसाहारी अधिक बीमार होते हैं या शाकाहारी ? शाकाहारियों की आयु अधिक होती या मांसाहारियों की? तीव्र बुद्धि, बल व स्फूर्ति शाकाहारियों में अधिक होती है या मांसाहारियों में ? घोड़ा शाकाहारी है। इसका गुण तेज दौड़ना है। पूर्व काल में अश्वों पर राजा व सेना शत्रुओं से युद्ध करते थे। घोड़ों का रथों में भी प्रयोग किया जाता था। आज भी दुल्हा घोड़ी पर अपनी बारात लेकर आता है। पूर्व काल में हाथी का भी युद्धों व अनेक प्रयोजनों में प्रयोग किया जाता था। हार्स पावर घोड़े के नाम पर ही है। हाथी भी शाकाहारी पशु है। इसमें अन्य पशुओं, यहां तक की सिंह से भी अधिक बल होता है। शेर डरपोक जानवर होता है। वह हाथी के पीछे से आक्रमण करता है। इससे बहुत से उत्तर मिल जाते हैं। हमें शाकाहारी बनने का प्रण लेना चाहिए। इसी से मानवता जीवित रह सकेगी और सबको सुख प्राप्त होगा।

वर्तमान समय में कोरोना नाम का वायरस सारे संसार को कुपित कर रहा है। इससे अब तक विश्व में लाख लोग संक्रमित हुए हैं तथा से अधिक लोग दिनांक तक मर चुके हैं। भारत में संक्रमित लोगों की संख्या से अधिक है तथा अब तक लोग मर चुके हैं। विश्व के डॉक्टर बता रहे हैं कि इस कोरोना संक्रमण का अभी तक कोई उपचार ज्ञात नहीं है। विश्व भर में अनुसंधान चल रहे हैं। इसका लाभ कब मिलेगा कहा नहीं जा सकता ? पूरा भारत विगत दिनों से लाकडाऊन में है। सोशल डिस्टेसिंग का पालन किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में भारत सरकार को स्वामी रामदेव जैसे यज्ञ के मनीषियों तथा कोरोना की औषधियों पर शोध करने वाले वैज्ञानिकों को यज्ञ के कोरोना व अन्य रोगों पर प्रभाव पर शोध करने को कहना चाहिए। सम्भव है यज्ञ से कोरोना वायरस को नष्ट किया जा सके। अनुसंधान करने में तो कोई बुराई नहीं है। पूर्वाग्रह उचित नहीं है। हम आशा करते हैं कि यदि यज्ञ पर वैदिक विद्वानों व पश्चिमी चिकित्सों द्वारा मिलकर अनुसंधान व अध्ययन किया जायेगा तो इसके सार्थक परिणाम होंगे।

पता - १९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

शरीर को सजाना सभ्यता और आत्मा को सजाने की कला का नाम संस्कृति है।

स्वामी समर्पणानन्द - व्यक्ति नहीं विचार

१ अगस्त जयन्ती

- स्वामी विवेकानन्द

अशेषसेमुषी सम्पन्न तथा अलौकिक प्रतिभा के धनी स्वनाम धन्य पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी की शताब्दी उन्हीं के द्वारा संस्थापित प्रभात आश्रम, मेरठ में मनायी गयी। इस अवसर पर वेद शोध संगोष्ठी सम्पन्न हुई, अनेक विश्वविद्यालयों के मान्य विद्वानों ने अपने शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किए, ब्रह्मचारियों ने स्वरचित संस्कृत पद्यों से पूज्य स्वामी जी को श्रद्धांजलि समर्पित की। इस प्रकार यह कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

मेरे मस्तिष्क में प्रश्न उत्पन्न हुआ- जिस व्यक्ति की हम जन्म शती मना रहे हैं, क्या वह केवल एक सुशिक्षित व्यक्ति मात्र था अथवा कुछ और भी ? बहुत ऊहापोह एवं चिन्तन के पश्चात् मैं इस निर्णय पर पहुंचा कि वह केवल व्यक्ति मात्र नहीं किन्तु विचार थे। उनके लिखित ग्रन्थ- कायाकल्प, पञ्चयज्ञ प्रकाश, गीता, भाष्य, ऋग्वेद मण्डल मणिसूत्र, शतपथ ब्राह्मण भाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद का आंशिक भाष्य, किसकी सेना में भर्ती होगे, कृष्ण या कंश की ? सप्त सिन्धु सूक्त, वेदों के सम्बन्ध में क्या जानों क्या भूलों आदि ग्रन्थों का आलोडन,परिशीलन करने से स्पष्ट हो जाता है कि इन ग्रन्थों का लेखक केवल असाधारण विद्वान् ही नहीं अपितु अपराजेय ऊहा, विलक्षण प्रतिभा रहस्य उद्घाटिनी मेधा एवं अतर्क्य पाण्डित्य का धनी था।

वे कोरे अक्षरों के पण्डित ही नहीं अपितु स्वलक्ष्य निर्धारित निर्भ्रान्त विचारधारा से परिपूर्ण भी थे। उनका दृष्टिकोण तथा लक्ष्य मध्यान्ह भास्कर के देदीप्यमान प्रकाश में हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष था। वे बाल्यकाल से ही तातस्य कूपोऽयमिति में आस्था रखने वाले नहीं थे। सामान्य से सामान्य बातों को भी जब तक मन-मस्तिष्क स्वीकार नहीं कर ले, तब तक उसे अपनाने में उन्हें संकोच होता था। बाल्यकाल के गुरुकुलीय जीवन में गले से यज्ञोपवीत निकाल फेक देने वाली घटना इसका ज्वलन्त प्रमाण है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा यह कहने पर कि यह गुरुकुल का अनुशासन है। इसका तुम्हारी आस्था से सम्बन्ध नहीं। यदि तुम्हें गुरुकुल में पढ़ना है तो यज्ञोपवीत धारण करना ही होगा। उन्होने अनुशासन मानकर यज्ञोपवीत पुनः धारण कर लिया किन्तु उसने अपनी आस्था का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उनका अहर्निश यज्ञोपवीत धारण करने के विषय में चिन्तन करना उनकी जागरूकता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

यज्ञोपवीत ही क्यों प्रत्येक विषय पर उनका यही दृष्टिकोण रहा, चाहे वर्ण व्यवस्था हो, वेद वैदिक मान्यतायें एवं परम्परायें, कोई भी विषय हो, उन्होने उसे तभी स्वीकारा, जब उन्हें तर्क-वितर्क के पश्चात् उससे सन्तुष्टि हुई। ऋषि दयानन्द की विचारधारा को भी उन्होने इसी प्रकार अपनाया, किन्तु उनकी विशेषता यही थी कि जब एक बार वैदिक ऋषियों के सिद्धान्तों को उन्होने स्वीकारा तो वे उसे आत्मसात् कर गये। कभी किसी वैदिक विषय में भ्रम होने पर उन्हें अपनी प्रज्ञा की न्यूनता ही कारण जान पड़ी, वेद या ऋषियों के सिद्धान्तों की निरर्थकता नहीं। महाभाष्यकार पतञ्जलि के इस वाक्य का वे ऐसे अवसर पर असकृत् ध्यान करते थे -

व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम्।

कई बार लोगों का प्रश्न होता है - क्या स्वामी समर्पणानन्द जी का कोई पृथक् स्वतन्त्र विचार था। इसका एकमात्र यही उत्तर सम्भव है कि आर्य परम्परा विरोधी उनका कोई विचार नहीं था। वे मनु की भांति आर्ष परम्परा के अनन्य उपासक थे -

आर्षधर्मोपदेशेन वेदशास्त्राविरोधिना।
यस्तर्केणानु संधत्ते स धर्म एव नापरः ॥ मनुस्मृति

ऋषि दयानन्द का यह वाक्य उनका पथ प्रदीप था -मैं वही मानता हूँ, जो ब्रह्मा से लेके जैमिनी मुनि तक ऋषि महर्षि मानते आए हैं। इन्हीं आदर्श वाक्यों पर निष्ठा रखते हुए उन्होने समस्त वैदिक वाङ्मय से लेकर इतिहास, पुराण, उपपुराण, वैद्यकशास्त्र, संगीतशास्त्र, बाईबिल, कुरान तथा अन्य पौरस्त्य, पाश्चात्य सभी दार्शनिकों के अशेष वाङ्मय का गंभीर अध्ययन किया। इस गम्भीर विस्तृत अध्ययन ने ही उन्हें वैदिक ऋषियों एवं उनके सिद्धान्तों का एकनिष्ठ प्रबुद्ध प्रहरी बनाया। उनके ग्रन्थ का एक-एक वाक्य तथा उनकी स्थापना या मान्यता आर्ष परम्परा की पोषक तथा आर्ष परम्परा से उद्भूत है। उनके सम्बन्ध में यह कहना यथोचित होगा कि वे आर्ष परम्पराओं के मूर्तिमान् स्वरूप थे। कुछ अल्पश्रुत पण्डितम्मन्य लोग जब उनके विस्मृत उदधिकल्प विचारों में डूबने लगते हैं तो अपने बौनेपन को छिपाने के लिए उन्हें कल्पना-प्रसूत तथा न जाने क्या-क्या कहने की धृष्टता करते है। स्वामी समर्पणानन्द जी के विषय में इस प्रकार कहते हुये ये लोग भूल जाते हैं कि इस दृष्टि से ये ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को भी कल्पना-प्रसूत कह रहे होते हैं क्योंकि ऋषि दयानन्द ने भी यजुर्वेद भाष्य में उक्त प्रकार से ही संगति लगाने का प्रयास किया है। ऋषि दयानन्द की संगति तो और अधिक विचार-चिन्तन की अपेक्षा रखती है।

आज हम उनके ११४ वें जन्मदिवस के अवसर पर श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए यह संकल्प लें तो श्रेयस्कर होगा कि हम भी उन्हीं की भांति गंभीर अध्येता बनकर अनन्य निष्ठा से आर्ष परम्पराओं के प्रचारक एवं प्रसारक बनेंगे। इस समय अन्य समस्त विचारधाराओं के असफल हो जाने पर इसी वैदिक आर्ष विचारधारा की ओर लोगों की दृष्टि लगी हुई है। आवश्यकता बस इस बात की है कि हम आलस्य प्रमाद छोड़कर अदम्य उत्साह एवं धैर्य के साथ इसके प्रसार में लग जायें।

हे विद्यानिधे ! तेरी प्रतिभा कुछ अद्भुत और निराली थी।
प्रतिरक्षी जिससे कांप उठे वह बुद्धि तेरी आली थी ।।
जब वक्ता बन कर बोले तुम मानों सरस्वती बोल रही।
वेदों के गूढ़ रहस्यों को अपनी बुद्धि से खोल रही ।।

-प्राचार्य - गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

संस्कृति चिन्तन	जब तक वेद व्यास न होगा, कोई तुलसीदास न होगा, परम्परा का भास न होगा, तब तक बन्धु विकास न होगा। अन्तर की धूमिल अरुणाई, तन्द्रामय जब तक तरुणाई, मरे हुए मन के मंदिर में, भारत माँ का वास न होगा।

विश्व-संस्कृत-दिवस (श्रावणी पूर्णिमा)

प्रत्येक कार्य का आरम्भ लघु होता है फिर वह महान् होता जाता है। इस दृष्टि से विश्व संस्कृत दिवस का लघु रूप व्यक्ति संस्कृत दिवस, फिर ग्राम-संस्कृत दिवस, जिला संस्कृत दिवस, प्रान्त संस्कृत दिवस, राष्ट्र संस्कृत दिवस अन्त में विश्व संस्कृत दिवस का क्रम होता है। किन्तु यह उतावलापन क्यों? लगता है कि संस्कृत बोलने में झिझक महसूस हुई इसलिए विश्व को संस्कृतज्ञ लोग अपने साथ समेटने के लिए विश्व संस्कृत दिवस मनाया जा रहा है। यह तो बिलकुल सत्य है, **"एकोऽहं बहुस्याम्"** न्याय से अकेला संस्कृत चिन्तक, वक्ता, श्रोता होने से काम नहीं चलने वाला, व्यक्ति, ग्राम, जिला, प्रान्त, राष्ट्र और विश्व की ओर अग्रसर होना पड़ेगा, रेखाचित्र बनाकर उसमें विविधाकृति बनाकर रङ्ग बनाना पड़ेगा। श्रवणा नक्षत्र जिस पौर्णमासी को पड़े वह **"श्रावणी पूर्णिमा"** है। नक्षत्र का नामकरण परमात्मा ने वेदों के श्रवणार्थ ही किया है। श्रावण मास से माघ मास तक वेदों का स्वाध्याय जोरों पर किया जाता रहा है। इसीलिए बहुधा चिन्तन करके श्रावणी पूर्णिमा को विश्व संस्कृत दिवस घोषित किया गया है।

- सम्पादक

स्वातंत्र्ययोद्धा-दिव्यानन्द

१५ अगस्त जयन्ती

जन्म : बुधवार, १५ अगस्त १९०६, उरई, झांसी (उ.प्र.)
निधन : सोमवार, ६ फरवरी १९८९, खरोरा, रायपुर (छ.ग.)

भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारंभ होकर अपने यौवन की ओर बढ़ रहा था। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह से मुक्त हो स्वामी दिव्यानन्द पूरी शक्ति से प्राणों की बाजी लगा साथियों सहित उक्त आंदोलन में भाग लेने लगे। उसी समय १९३९ के उत्तरार्द्ध में समथर राज्य आन्दोलन एवं झांसी कांग्रेस कमेटी के संयुक्त प्रयास से युवक हृदय सम्राट सुभाषचन्द्र बोस, समथर और टोड़ी गांवों में पधारे। बहुत ही विशाल जनसमूह के सम्मुख सुभाष बाबू का प्रभावशाली भाषण, उस समय की स्थिति के अनुरुप हुआ। उक्त कार्यक्रम को क्रियान्वित करने में हमारे चरित्र-नायक की मुख्य भूमिका रही। नेताजी के भाषण ने उन्हें उद्वेलित किया फलस्वरुप अब वे छद्म् वेश में तोड़फोड़ को देख झांसी के थानेदार ने अधिक सिपाहियों को ड्यूटी पर लगाये थे। थानेदार साहब दिल के बड़े उदार और अन्दर से अंग्रेजों के खिलाफ थे। झांसी नगर निगम के एक अधिकारी श्री कालिका प्रसाद उक्त हिन्दू थानेदार के मित्र थे और दिव्यानन्द जी को भी सहयोग देते थे। एक रात्रि कालिका बाबू ने थानेदार और दिव्यानन्द स्वामी का परस्पर परिचय कराया।

स्वल्पकाल का वह परिचय प्रगाढ़ मैत्री में बदल गया। स्वामी जी से **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'** का भाव समझकर थानेदार महोदय ने अप्रत्यक्ष सहयोग का आश्वासन दिया। परिणामस्वरुप जब तक वे झांसी में रहे दिव्यानन्द जी क्रांतिकारी कार्यों में तन्मयता से लगे रहे। दैवदूर्विपाक से उक्त थानेदार का स्थानान्तरण हो गया और उनके स्थान में आये एक मुसलमान थानेदार। एक बार रात्रिगश्त में निकले मुसलमान थानेदार ने अंधेरे में रेलपटरियों पर कुछ छाया देख जोश में उच्च स्वर से सिपाहियों को आदेश दिया कि पकड़ लो, कोई भागने न पाये। थानेदार की आवाज सुनकर कुछ भाग निकले, कुछ पकड़े गये। अंधेरे का लाभ उठा दिव्यानन्द जी शौचालय में जा छिपे और कुछ घंटे बाद उजाला होने से पहले ही सिपाहियों से नजर बचाकर भाग गये। नदी के पार जंगल में भूमिगत रहे। कंदमूल, फल और पत्ती से अपनी क्षुधा का निवारण करते रहे।

इधर झांसी पुलिस ने इस महान विद्रोही युवक को पकड़ने जाल फैलाया, ५० हजार रुपये का ईनाम पकड़वाने वाले के लिये घोषित किया। फिर भी इस बाज को कैद न कर सके क्योंकि दिव्यानन्द जी पण्डा बनकर नदी किनारे पुरोहिताई करने लगे थे। उनका निवास उस काल में मुसलमानों का कब्रिस्तान था। जहां पुलिस वाले तो क्या सामान्य लोगों की नजरें भी नहीं पहुंचती। कुछ समय पश्चात् वे चिरगांव में भारत के विख्यात कवि मैथिलीशरण गुप्त, जिन्होंने **"भारत-भारती"** काव्य की रचना कर तीन-तीन पीढ़ियों की सुप्त धमनियों में जमे रक्त को स्वाधीनता का मंत्र फूंक कर प्रवाहित किया और जिनके घर पर प्रकट-अप्रकट रुप से स्वातंत्र्य-समर से जुड़े राष्ट्रकर्मी आश्रय पाते थे, उन्हीं में हमारे चरित्रनायक भी थे, वे वहां जाकर भूमिगत हो गये।

सन् १९४१ में राष्ट्रकवि गुप्त जी के परामर्श से व्यक्तिगत सत्याग्रह कर स्वामी जी ने गिरफ्तारी दी। एक वर्ष का कठोर कारावास फतहगढ़ चूनार जेलों में दिया गया। उल्लेखनीय है कि पुलिस उधर माताप्रसाद को ढूंढती रही और इधर दिव्यानन्द स्वामी जेल में रहे। सन् १९४२ ई. स्वामी जी जैसे ही अंग्रेजी-जेल से बाहर आये, "करो या मरो" का सिंहनाद सुनकर "अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन" में पुनः कूद पड़े। अब उनका कार्यक्षेत्र सीमित न रहकर

व्यापक हो गया। फिर से छद्मवेश में चिरगांव, मोठ, ओरछा, झांसी इत्यादि जगहों पर तोड़-फोड़ तथा क्रांतिकारियों तक हथियार आदि पहुंचाने का कार्य करने लगे। भूमिगत होकर कार्य करने में जिन सज्जनों का सहयोग उन्हें मिला, उनमें मोठ निवासी नारायण प्रसाद तिवारी, मदन मोहन लिटौरिया (वकील), तुलसीदास शर्मा, ब्रजवासी खेर तथा रेव नामक स्थान पर हरदेव सिंह बुंदेला और चिरगांव में नवलकिशोर मिश्र, सुन्नूलाल बिसवारी, कालका प्रसाद बख्शी, महंत त्रिवेणीदास एवं ओरछा में बृजकिशोर मिश्र, मिथला प्रसाद गोस्वामी, भानुप्रतापसिंह (तहसीलदार) इत्यादि विशेष सहयोगी थे। हथियार लाने-ले जाने वालों में माताप्रसाद ऊर्फ दिव्यानन्द स्वामी के साथे थे - डा. बी.बी. केशकर, स्वामी स्वराज्यनन्द, शिवसम्पत्ति शर्मा तथा कानपुर के भी १-२ सज्जन थे सन् १९४३ में अंग्रेजों नेशक के आधार पर छद्मवेशधारी इस स्वामी को बन्दी बना लिया और आगरा जेल में दो वर्ष की सजा दी। संभवतः यहीं पर लालबहादुर शास्त्री, पं. श्रीराम शर्मा प्रभृति व्यक्तित्व उनके निकट सम्पर्क में आये। स्वामी जी के क्रियात्मक जीवन, स्पष्टवादिता, निश्छल व्यवहार, वाङमाधुर्य, दृढ़ वैदिक आस्थासे युक्त व्यक्तित्व से वे बहुत प्रभावित हुए। उस समय क्रांतिकारी का एक ही नारा था -

तिरंगा ये हर किले में चढ़ेगा।
इसका बल, रोज दूना बढ़ेगा॥

इस प्रकार प्राण-प्रण से जुटे महान् वीर, त्यागी, तपस्वी, बलिदानी महापुरुषों के बदौलत ही १५ अगस्त १९४७ को आर्यावर्त्त भारत में स्वातंत्र्य सूर्य का उदय हुआ।

आर्यसमाज को गर्व है कि उन्होंने आजादी की लड़ाई में सबसे ज्यादा वीर बलिदानी, राष्ट्र को समर्पित किया। यथा - महान् क्रांतिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, शहीद भगतसिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, पं. गेंदलाल दीक्षित, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल एम.ए., वीर सावरकर, गया प्रसाद शुक्ल, स्वामी श्रद्धानन्द और इसी कड़ी में पं. माताप्रसाद ऊर्फ दिव्यानन्द स्वामी इत्यादि थे। स्वतंत्रता प्राप्ति में सर्वाधिक ८५% से भी अधिक योगदान अकेले आर्यसमाज का रहा - ऐसा सभी शीर्षस्थ नेताओं ने घोषित किया। आर्यसमाज न होता तो -

न होता स्वराज्य सूर्योदय, न ज्ञान का प्रकाश होता।
न वेद शास्त्र, न रामकृष्ण, न सत्य का विकास होता॥
होता हिन्द किन्तु अवैदिक मतवादियों से पूर्ण।
मेरे देश का गौरव न गूंजता भूमण्डल में॥

- जीवन दर्पण से साभार उद्धृत.

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्, मा स्वसारमुत स्वसा

का संदेश देता भ्राता-स्वसा का स्नेह पर्व रक्षाबन्धन भारतीय संस्कृति के मानवीय जीवन मूल्यों के संरक्षण के प्रति संसार को प्रेरित करता है। रक्षा बन्धन का अति प्राचीन इतिहास नहीं किन्तु यह सांस्कृतिक पर्व लोक में बहुप्रचलित है। यह पर्व माता-पिता, भ्राता, भगिनी, मित्र, प्रतिवेशी आचार्य सबको यह बताता है कि हमें अपने संबन्धों की रक्षा के प्रति जागरूक रहना चाहिए। धर्म ने संपूर्ण प्रजा सम्बन्धों को रक्षित किया है। अतः यह वैदिक संस्कृति और धर्म का पावन संदेश है।

आरोग्य जगत

होमियोपैथी से थायरॉइड का उपचार संभव : डॉ. उत्कर्ष त्रिवेदी

आज कल की भाग दौड़ भरी जिन्दगी में मनुष्य खुद की तरफ कम ध्यान दे पाता है और जब तक अपनी ओर ध्यान देता है, तब तक वो कई प्रकार की बीमारियों का शिकार हो चुका होता है और उसकी जिन्दगी दवाईयों पर निर्भर हो जाती है। कुछ रोग ऐसे हो जाते हैं जिनमें उसे सारी उम्र दवा खानी पड़ती है । इसी प्रकार एक समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, वो है थायरॉइड की बीमारी आइए, संक्षिप्मत में थायरॉइड के बारे में जानने की कोशिश करते हैं ।

थायरॉइड ग्लैंड क्या है ? प्रत्येक मनुष्य के गले के सामने के भाग में तितली के आकार की एक ग्रन्थि होती है, जिसे थायरॉइड ग्लैंड कहते हैं। इससे हार्मोन स्रवण होते हैं। टी-३ यानी त्रिआईडोथायरॉनिन और टी-१४ यानी थायरॉक्सिन मुख्य हार्मोन होते हैं और इन हार्मोन्स को ब्रेन की पिट्यूटरी ग्लैंड से स्रावित थायॉइड स्टिम्युलेटिंग हार्मोन नियंत्रित करता है। टी-३ और टी-४ शरीर में ऑक्सीजन के उपयोग की मात्रा को बढ़ाते हैं। इन हार्मोन्स के अलावा केल्सिटॉनिन नामक हार्मोन भी स्रावित होता है। यह शरीर में कैल्शियम और फास्फेट को नियंत्रित करता है। ये हार्मोन्स शरीर में बहुत सी क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं जैसे ग्रोथ, डेवलमेंट, मेटाबॉलिजम, शरीर के तापमान को नियंत्रित करना आदि।

थायरॉइड डिजीज के प्रकार :-

(१) घेंघा - यह शरीर में आयोडीन की कमी से होने वाला रोग है, इसमें थायरॉइड ग्लैंड में सूजन आ जाती है।

(२) हाइपरथायरॉडिज्म :- इसमें थायरॉइड हार्मोन का बहुत ज्यादा स्राव होता है।

(३) हाइपोथायरॉडिज्म :- इसमें थायरॉइड हार्मोन का स्राव कम होता है।

(४) ग्रेव्स डिजीज :- इसमें थायरॉइड ग्लैंड हार्मोन बनाने के लिये बहुत ज्यादा उत्तेजित हो जाते हैं।

(५) थायरॉडाईटिस :- इसमें थायरॉइड ग्लैंड में सूजन और जलन के कारण दर्द होता है।

(६) थायरॉइड कैंसर :- इसमें थायरॉइड ग्लैंड का कैंसर हो जाता है।

(७) थायराइड नोड्यूल :- इसमें थायरॉइड ग्लैंड में गांठ हो जाती है।

थाइरॉइड के लक्षण :- कब्ज होना, डिप्रेशन होना, शरीर का तापमान बढ़ना, भूख ज्यादा लगना, हाथों में कंपन होना, पसीना ज्यादा आना, बाल सफेद होना या झड़ना, थकान होना, चिड़चिड़ाहट होना, खुजली होना, सांस लेने में तकलीफ होना, नर्वस होना, धड़कन बढ़ना या कम होना, वजन बढ़ना, ठंड व रोशन सहन न होना, उच्च रक्तचाप, त्वचा रुखी होना, धड़कन कम होना, चेहरे पर सूजन रहना, महिलाओं में पीरियड्स से संबंधित तकलीफ होना, मसल्स में कमजोरी और अकड़न, जोड़ों में दर्द, अकड़न और सूजन, नींद की समस्या होना।

होमियोपैथिक उपचार (होमियोपैथिक मेडिसिन की जानकारी) :- क्या किसी भी रोग के लिये जिंदगीभर दवाई खाते रहना सही इलाज होता है ? जबकि थायरॉइड की समस्या होम्योपैथिक मेडिसिन से कुछ समय में हमेशा के लिए ठीक हो जाती है। जानकारी हेतु कुछ होम्योपैथिक मेडिसिन के बारे में जानकारी दे रहे हैं जो थायरॉइड की समस्या को ठीक करती है। (यह एक जटिल रोग होता है, अतः स्वयं इलाज करने की कोशिश न करें। कुशल होम्योपैथ की देखरेख में ही इलाज कराएँ।)

फाईटोलक्का बेरी :- गले में सूजन व दर्द रहता है, मोटापा बढ़ता जाता है, सांस लेने में तकलीफ होती है, महिलाओं में ब्रेस्ट में बहुत ज्यादा दर्द होता है, जीवन के प्रति उदासीन रहती है, त्वचा रुखी होती है जिससे खुजली होती है, ग्रन्थियों की सूजन रहती है तो इसे लें।

केल्केरिया-कार्ब :- रोगी को पसीना (खासकर सिर में) बहुत आता है, रोगी दिखने में बहुत गोरा और थुलथुला होता है, अधिक मेहनत से तन और मन थक जाता है, हड्डियां कमजोर और टेढ़ी हो जाती है, बच्चे मोटे होते चले जाते हैं और पेट बढ़ता है, अंडा खाना बहुत पसंद होता है, ग्लैंड्स बढ़ जाती है। पीरियड्स में बहुत ज्यादा ब्लीडिंग होती है, मन में इतने विचार आते हैं कि रोगी को रात में नींद नहीं आ पाती और शान को समय नींद आती है, मन में अप्रिय विचार आते रहते हैं, कमर दर्द होती तो ये दिया जा सकता है।

नेट्रम-म्यूर :- बहुत कमजोरी और थकान महसूस होती है, थायपरथायरॉडिज्म, घेंघा, डायबिटीज होती है, सुबह-सुबह बहुत कमजोरी महसूस होती है, यहां तक कि बिस्तर से उठने का मन भी नहीं होता है, सिरदर्द सूरज उगने से लेकर सूरज डूबने तक होता है, शरीर में खून की कमी हो जाती है, मरीज नमक बहुत खाता है, छाती में सिकुड़न सी लगती है, धड़कन बढ़ जाती है तो इसे लेने से फायदा होता है।

थायरॉइडीनम :- शरीर में रक्त की कमी रहती है, शरीर में कम्पन होता रहता है, बहुत ज्यादा मोटापा बढ़ता है (मोटापे में बहुत सावधानीपूर्वक उपयोग करना चाहिए) हार्ट की कमजोरी, दिल की धड़कन बढ़ जाती है, मीठी चीज या मिठाई खाने की बहुत इच्छा होती है, अचानक थकान महसूस होने लगती है, त्वचा सूखी रहती है, चिड़चिड़ापन, छोटी छोटी बातों पर गुस्सा आता है, हाथ-पैर ठंडे रहते हैं, निम्न रक्त, सुबह नींद बहुत आती है, उंगलियां सुन्न हो जाती है, पूरे शरीर में खुजली होती है तो इसे लें।

आयोडम :- बहुत अदिक भोजन करने के बाद भी रोगी दुबला होता रहता है, थोड़ी सी मेहनत करते ही पसीना आ जाता है, रोगी को ठंडी हवा में रहना अच्छा लगता है, सीढ़िया चढ़ते समय सांस फूल जाती है, रोगी को अकेले रहना पसंद है, सारे शरीर में तेज गर्मी लगती है, बार-बार यूरिन होती है तो इस दवा को लेना अच्छा रहेगा। कई रोगी उपचार कराकर ठीक हो गए हैं व अन्य कई रोगियों का इलाज चल रहा है।

नोट :- होम्योपैथी में रोग के कारण को दूर करके रोगी को ठीक किया जाता है। प्रत्येक रोगी की दवा उसकी शारीरिक और मानसिक अवस्था के अनुसार अलग-अलग होती है। अतः बिना चिकित्सकीय परामर्श यहां दी हुई किसी भी दवा का उपयोग न करें।

पता :- त्रिवेदी होमियोपैथिक क्लीनिक, लीली चौक, पुरानी बस्ती रायपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
एवं अग्निदूत परिवार की ओर से
स्वतन्त्रता दिवस, श्रावणी पर्व एवं अग्निदूत
पत्रिका के १६वें वर्ष में प्रवेश पर समस्त
प्रदेशवासियों एवं सुधी पाठकों को
हार्दिक शुभकामनाएँ

समाचार प्रवाह

डी.ए.व्ही. इस्पात नन्दिनी के विद्यार्थियों का सी.बी.एस.ई बारहवीं की परीक्षा में शानदार प्रदर्शन

नन्दिनी नगर। सी.बी.एस.ई. द्वारा आयोजित बारहवीं की परीक्षा २०२० में डीएवी इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी अहिवारा के छात्र-छात्राओं ने शिरकत की, जिसमें शाला का परिणाम उत्कृष्ट रहा। कक्षा बारहवीं में कुल ५९ विद्यार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया। इनमें ८ विद्यार्थियों ने ९० प्रतिशत अधिक व ३९ विद्यार्थियों ने ७० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर विद्यालय का मान बढ़ाया। इसमें शाला के राहुल शर्मा ९५.८ प्रतिशत, इशिता राउत ९४.८ प्रतिशत, भूमि वर्मा ९४.६, तनुश्री आचार्य ९४ प्रतिशत, साक्षी बंछोर ९२.८, निशांत कुमार साहू ९२.४ प्रतिशत, निकिता पंडा ९०.६, नमन परगनिहा ९०.४ प्रतिशत अंक हासिल कर विद्यालय का नाम रोशन किया। शाला में विषयवार प्राप्तांकों में शारीरिक शिक्षा में ९९, बिजनेश स्टडी में ९७, इनफारमेशन प्रेक्टिस ९७, एकाउटेंस ९५, अंग्रेजी ९५, भौतिकी ९५, रसायन शास्त्र ९५, जीव विज्ञान ९५, गणित ९६ अंक प्राप्त किये। इस शानदार सफलता पर विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक भिलाई इस्पात संयंत्र श्री वी.बी. सिंह ने हर्ष जताते हुए सभी छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को बधाई दी एवं कहा कि किसी भी सफलता के लिये गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया जाये तो सफलता निश्चित ही मिलती है। विद्यालय के प्रबंधक एवं क्षेत्रीय निदेशक छत्तीसगढ़ परिक्षेत्र श्री प्रशांत कुमार ने विद्यालय के परीक्षा परिणाम की प्रशंसा करते हुए प्राचार्य डॉ. बी.पी. साहू एवं समस्त शिक्षकों को बधाई दी एवं सभी छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की। साथ ही समस्त शाला परिवार समिति के सभी पदाधिकारियों ने बच्चों की सफलता पर हर्ष व्यक्त कर शुभकामनाएँ दी है।

संवाददाता - प्राचार्य, डी.ए.वी. नन्दिनी नगर भिलाई

हाईस्कूल परीक्षा में डी.ए.वी. छाल रायगढ़ जिले में टॉप पर

छाल। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड २०२० का कक्षा दसवीं का परिणाम घोषित हुआ, जिसमें डीएवी छाल के विद्यार्थियों ने ऐतिहासिक प्रदर्शन किया। डीएवी छाल के छात्र सागर चंद्रा ने ९८.२ प्रतिशत अंक प्राप्त कर सम्पूर्ण रायगढ़ जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। शाला का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। परीक्षा में कल ७२ विद्यार्थी सम्मिलित हुए, जिसमें ४८ प्रथम श्रेणी व २१ द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। शाला के सागर चंद्रा ने ९८.२ अंक प्राप्त कर शाला में प्रथम स्थान प्राप्त किया। मानसी प्रधान ९४.८ अंकों के साथ द्वितीय रही, भूमि अग्रवाल ९३.४ अंक एवं निखिलेश्वर पटेल ९३.४ अंकों के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। शाला के कुल दस विद्यार्थियों ने ९० या अधिक प्रतिशत अंक अर्जित किए। ९० प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करने वालों में आंचल स्वर्णकार ९१.४ प्रतिशत, बिस्मय प्रधान ९२.८ प्रतिशत, दिग्विजय डनसेना ९२.६, कनक साय ९१.६, रितिक ९०.२, जेनीथ गार्डिया ९०.२ प्रतिशत अकं प्राप्त किये। प्राचार्य के.डी.शर्मा ने सभी सफल विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाएँ तथा पालकों को बधाई प्रेषित की है। प्राचार्य ने शाला की इस उपलब्धि के लिए सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा किए गए योगदान की भी सराहना की है।

संवाददाता : अजय शर्मा, डी.ए.वी. छाल

सभा के उपप्रधान श्री दयाराम वर्मा का आकस्मिक निधन

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान एवं आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के यशस्वी प्रधान, कर्मठ, संघर्षशील, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी श्री दयाराम वर्मा उम्र ७३ वर्ष का दिनांक २४ अगस्त २०२० दिन सोमवार को हृदयगति रुक जाने के कारण आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्त्येष्ठि संस्कार पुरोहित सुशील स्वामी आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर एवं पं. लोचन शास्त्री दुर्ग के पौरोहित्य में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, सभा कोषाध्यक्ष श्री चतुर्भुज कुमार आर्य, कार्यालय मंत्री एवं मुख्य अधिष्ठाता आचार्य बलदेव राही, अंतरंग सदस्य श्री आनन्द भोई, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर से श्री बी.पी. शर्मा एवं आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण, सभा कार्यालय दुर्ग के प्रबंधक श्री के.के. गुप्ता एवं कर्मचारीगण सहित परिवार के समस्त सदस्यगण उपस्थित रहे। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य एवं अग्निदूत परिवार ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त हो, शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग द्वारा श्रद्धाञ्जलि

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान एवं आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के प्रधान श्री दयाराम वर्मा के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज मठपारा दुर्ग में साप्ताहिक हवन के उपरान्त शोक सभा आयोजित किया गया, जिसमें दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई एवं ईश्वर से प्रार्थना की गई कि शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। **अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4031215 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

– **दीनानाथ वर्मा**, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030972

॥ ओ३म् ॥

॥ विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ (अर्थ) विद्या से अमृत्व की प्राप्ति होती है।

विद्या ददाति विनयम्

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय

जी.ई. रोड, टाटीबन्ध, रायपुर (छ.ग.)

छ.ग. शासन–शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त (पंजी. क्र. 182057)

संचालित : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रवेश प्रारम्भ

शिक्षा सत्र : 2020–21

हिन्दी माध्यम

कक्षा पहली से दसवीं

कक्षा ग्यारहवीं–बारहवीं

(गणित, जीव–विज्ञान, कामर्स, कला)

हमारा संकल्प

शिक्षा के साथ
वैदिक संस्कार
दैनिक संध्या, हवन,
बौद्धिक विकास के साथ
नैतिक विकास

ENGLISH MEDIUM

Nursery to XI

(Math., Bio., Commerce)

सम्पर्क : कार्यालय : 0771–2572013, प्राचार्य : 9179509030, सचिव : 9826363578

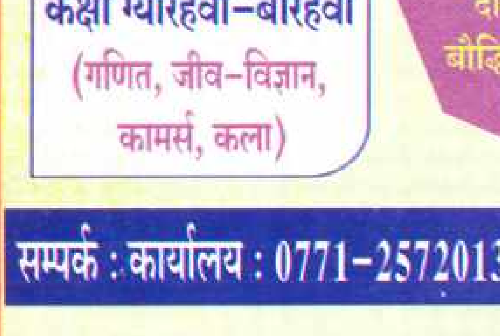

विद्यालय पहुँच हेतु वाहन सुविधा उपलब्ध

CHH-HIN/2006/17407 अगस्त 2020 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : 'अग्निदूत', हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय-छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१००१